सत्यमेव जयते

संयुक्ता

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

नौवां अंक

नौवां अंक

संयुक्ता परिवार

2022

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

संयुक्ता परिवार

प्रधान संरक्षक : श्री संजीव गोयल , महानिदेशक
मुख्य संरक्षक : श्री रमेश कुमार शर्मा निदेशक(प्रशासन)

मुख्य संपादक : श्रीमती अमृतपाल कौर, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
सह संपादक : श्री रमेश खटक, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

अंक : नौवां (ई- पत्रिका)
प्रकाशक : कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

नोट: पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार है । संयुक्ता परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता ,उसमे प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं ।

क्रम संख्या	शीर्षक	कहानी ,लेख ,कविता	श्री/श्रीमती/सुश्री	पृष्ट सं.
1.	सिय सुंदरता बरनि न जाई..	लेख	रमेश खटक,	17-18
2.	शनिवार की शाम	कविता	अमृत पाल कौर	19
3.	वो कल	लेख	अमृत पाल कौर	20
4.	इंसान तुम्हे क्या मिला	कविता	अवतार सिंह	21
5.	शायरी	कविता	अवतार सिंह,	22-23
6.	शहद में समायी स्वस्थता	लेख	बलजिंदर कौर	24-25
7.	विचारों की दुनिया से बचाव	लेख	राजेश	26
8.	आईना	कविता	गुरमुख सिंह,	27
9.	मझधार	कविता	संजीव	39
10.	जिंदगी @40	कविता	संजीव	40
11.	खुदा और मैं	कविता	सेवा राम	41
12.	देवी नहीं मुझे रक्षक बनना है	कविता	अनुपमा वैद्य	42
13.	बिना मृत्यु के पुर्नजन्म	कहानी	बलजिंदर कौर	43-44
14.	मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा	लेख	राजीव वलिया	45
15.	पर्यावरण प्रदूषण	लेख	यादेव सिंह,	46
16.	सहनशीलता	लेख	बीर सिंह	47
17.	सारहीन	लेख	अनंत राम	48
18.	ध्यान करने से जीवन में परिवर्तन	लेख	राजेश	49

19.	भगवान कैसे दिखते हैं	लेख	रोहित राणा सुपुत्र यादेव सिंह	50
20.	नारी की अश्रुपूरित कहानी	कविता	सुनील	51
21.	ना गोविंद बचाने आएंगे	कविता	सुनील	52
22.	नजरिया	लेख	वंदना मेहता	53
23.	भारत में भूजल संसाधन आपूर्ति एव चुनौती	लेख	सार्जन कुमार	54-55
24.	रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया का डिजिटल मुद्रा में उत्कृष्टि: भारतीय वित्त में नये युग की शुरुआत"।	लेख	राजकमल	56
25.	हमारा पर्यावरण	लेख	सुदेश कुमार	57
26.	कुछ बातें....... कुछ ख़ामोशी	कविता	अमृत पाल कौर	58
27.	गजल	कविता	रविंदर सिंह	59

अनुक्रमणिका

संदेश		पृष्ट
1.	प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) पंजाब का संदेश	6
2.	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा का संदेश	7
3.	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का संदेश	8
4.	प्रधान निदेशक (रक्षा सेवाएं) चंडीगढ़ का संदेश	9
5.	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ का संदेश	10
6.	मुख्य सरंक्षक का संदेश	11
7.	सरंक्षक का संदेश	12
8.	संपादकीय	13
9.	पाठकों के पत्र	14-15

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विभागीय पत्रिका 'संयुक्ता' का नौवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय का दर्पण होती हैं । राजभाषा के प्रसार में भी विभागीय पत्रिकाओं का बहुत योगदान रहता है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं के द्वारा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति लगाव तथा स्नेह प्रदर्शित होता है ।

विभागीय गृह पत्रिकाओं की अवधारणा कार्मिकों के बीच रचनात्मक लेखन एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना और एक सार्थक मंच प्रदान करना है । आशा है कि 'संयुक्ता' अपनी सार्थकता को इसी प्रकार सार्थक करती रहेगी ।

राजभाषा के प्रचार प्रसार में 'संयुक्ता' पत्रिका का सराहनीय प्रयास बनाए रखने के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सुश्री नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार
(लेखा परीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़

संदेश

राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के लिए पत्रिकाएं एक सशक्त माध्यम हैं। इस दिशा में आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' के नौवें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। इस सार्थक प्रयास के लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिकाएं हमें कार्यालय में वर्षभर आयोजित विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय कार्यकलापों से अवगत करवाने के साथ ही कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक सशक्त मंच प्रदान करती हैं। इससे कार्यालय में पठन-पाठन एवं सृजन का एक अनूठा वातावरण तैयार होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति कार्यालय के कार्य में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग के प्रति उत्साह एवं रुचि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के नियमित सफल प्रकाशन तथा स्वर्णिम भविष्य के लिए अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

श्री नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) हरियाणा

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय महानिदेशक (केन्द्रीय) चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" के नौवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है ।

पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के उत्तरोतर विकास के साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी महत्वपूर्ण पूर्ण भूमिका निभाती है । इससे कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है जिससे हिंदी के प्रयोग को बढावा मिलता है ।

विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों से भी अवगत कराती हैं। हिंदी हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक होने के साथ-साथ राजभाषा भी है । इसलिए हम दोनों भूमिकाओं के प्रति उत्तरदायी हैं । हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति को जीवंत बनाए रखा है । राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति एवं एकता के लिए आवश्यक है।

पत्रिका के संपादन एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

श्री शैलेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) हरियाणा

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का अतुल्य योगदान रहा है । भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह पत्रिका निश्चित रूप से सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं अभिरुचि दर्शाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होगी ।

कार्यालय एवं पत्रिका के संपादक मंडल की ओर से किये गए श्रम साध्य प्रयास वास्तव में सराहना के योग्य हैं ।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएँ ।

श्री वी.एस. वैकटनाथन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, चंडीगढ़

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संयुक्ता के नौवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से संबंधित सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादकों को बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक नया और अहम् आयाम प्रस्तुत किया है। हिन्दी पत्रिकाएं विभाग से जुड़ी प्रतिभाओं को अपना कौशल दिखाने एवं उसे और निखारने का अवसर प्रदान करती है । इसके अतिरिक्त यह पत्रिकाएं हिन्दी भाषा के सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने में भी सहायक हैं। ये पत्रिकाएं समधर्मी कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं, जिससे एक-दूसरे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती रहती है। यह न केवल सरकारी कामकाज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम है।

"संयुक्ता" पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनायें देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

श्री तेग सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब
एवं यू.टी चंडीगढ़

प्रधान सरंक्षक का संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'संयुक्ता' के नवम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।इस अवसर पर 'संयुक्ता' परिवार के सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं जिनके सफल प्रयासों ने हिन्दी ज्ञान को साकार रूप देते हुए पाठकों की रुचि अनुरूप अपनी कृतियों एवं अभिव्यक्तियों को समेटने का प्रयास किया है।

राजभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता, संस्कृति एवं सभ्यता की पहचान है। हम सभी का यह संवैधानिक कर्त्तव्य है कि कार्यालय के कार्यों में सहज एवं सरल हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें, जिससे हिन्दी की तीव्र प्रगति संभव हो सके। पत्रिकाएँ कार्यालय में हिन्दी में कार्य करने का वातावरण तैयार करने में प्रेरणा का स्रोत रही हैं ।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को साधुवाद, जिनके अथक परिश्रम को देखते हुए यह विश्वास दृढ़ होता है कि विगत अंकों की भांति पत्रिका का नवीन अंक भी पाठकों को भाएगा।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

श्री संजीव गोयल
महानिदेशक

मुख्य सरंक्षक का संदेश

हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता ' के नवम अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यन्त हर्ष एवं आनन्द का विषय है। संपादक मंडल के अथक परिश्रम का परिणाम है कि हम पत्रिका को इस रूप में प्रस्तुत कर रहें हैं। राजभाषा हिन्दी देश की अस्मिता से जुड़ी है। परस्पर बोलचाल, कार्यालयी कामकाज और अपने दैनिक व्यवहार में हिन्दी को अधिक से अधिक शामिल कर हम देश की एकता, अखंडता को बनाए रखने में अपना योगदान दे सकते है। राजभाषा के विकास के प्रति हम सदैव निष्ठावान रहे हैं और 'संयुक्ता' इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। संयुक्ता' राजभाषा के प्रति हमारे लगाव और समर्पण की एक प्रतिनिधि पत्रिका है जो साहित्य एवं सूचना संवर्धन के साथ-साथ कार्मिकों की रचनात्मक वैचारिक क्षमता को और भी प्रखर कर रही।

आज "संयुक्ता" के नौवें अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को और मौलिक रचना प्रदान करने वाले रचनाकारों को ,जिन्होंने अपने लेखों व रचनाओं के द्वारा पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में अतुलनीय सहयोग दिया है ,हार्दिक बधाई देता हूँ ।

श्री रमेश कुमार शर्मा
निदेशक(प्रशासन)

संपादकीय

'संयुक्ता' पत्रिका का नवम अंक आपके समक्ष रखते हुए अतीव हर्ष का एहसास हो रहा है। पत्रिका का प्रत्येक अंक हिन्दी के प्रसार की ओर हमारा एक सुदृढ़ कदम है। राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक माहौल तथा कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से 'संयुक्ता' का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था ।

भाषा संस्कृति की संवाहक है और संस्कृति समाज की धरोहर इस आधार पर यही कहा जा सकता है कि भाषा का सीधा संबंध राष्ट्र से है, भाषा ही हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक अस्मिता का माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही हमारी पहचान और ऐतिहासिक स्मृतियां सुरक्षित रहती हैं। हमें गर्व है कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है जो पूरी तरह से सरल, सौम्य एवं वैज्ञानिक है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिकांश भारतीय समझ व बोल सकते हैं और जो राष्ट्र की एकता और अखंडता को एक सूत्र में बांधती है। 'संयुक्ता' पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में बहुत ही सहज-सरल एवं स्वाभाविक हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है ताकि आम जन इन लेखों को आसानी से समझ सकेंराजभाषा हिन्दी के विकास में यह पत्रिका एक छोटा सा पर हमारे लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास है । आशा करती हूँ कि यह प्रयास लगातार सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता जाए ।

'संयुक्ता' पत्रिका के आठवें अंक की बहुत ही सराहना हुई है। इसका प्रमाण है देश भर के विभिन्न कार्यालयों से आये उत्साहवर्द्धक व सराहना भरे पत्र । मैं पत्रिका प्रकाशन में अपने वरिष्ट अधिकारियों के सहयोग एवं मार्गदर्शन हेतु आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में, मैं 'संयुक्ता' परिवार से संबंधित तमाम लेखकों, पाठकों, संपादन सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए भविष्य में भी उनके सक्रिय सहयोग का अनुरोध करती हूँ। आप सभी के विचार तथा सम्मतियों की प्रतीक्षा में......

श्रीमती अमृत पाल कौर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पाठकों के पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित "संयुक्ता" के आठवें ई- अंक की प्रति वेबसाइट से डाउनलोड कर प्राप्त की गई । सर्वप्रथम, "संयुक्ता" पत्रिका प्रेषण के लिए सहर्ष सधन्यवाद । इस पत्रिका का मुख पृष्ठ सुन्दरहै ! पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में सकारात्मकता, रचनात्मकता, तथा नवीनता को उत्कृष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया है । रचनाओं के चयन की दृष्टि से यह अंक बहुत ही प्रशंसनिय है । इस पत्रिका में अधिकारिकों के परिवार के सदस्यों की रचनाओं को सम्मिलित कर के आपने उनका भी साहित्य के रूचि का उत्साहवर्धन किया है । पत्रिका में समाविष्ट सभीरचनाएँ ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद तथा प्रेरणादायी हैं । विशेषरुप से प्रकाशित कविताओं मे रंगोली, अपना पराया, खुद से, चालीस साल तथा लेख में योग भगाए रोग, जीवन के नाटक के मंच के नाटक का योगदान, अनुशासन का महत्व पठनीय है । इस पत्रिका में समाहित अन्य सभी रचनाएँ सुपाठ्य एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ प्रकाशन एवं सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाईयाँ । पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु "किरण" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ राजभाषा
कार्यालय महालेखाकार (ले.व.ह)-II ,महाराष्ट्र ,नागपुर

आपके कार्यालय की पत्रिका 'संयुक्ता' के आंठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ठ, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई ।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/ राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.) शिमला ,हिमाचल प्रदेश

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई गृहपत्रिका "संयुक्ता " के 8वें अंक की एक ई प्रति प्राप्त हुई पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है । विशेष रूप से मैं कविता हूँ", "मेरे साथ मेरा क्या जाएगा", "कामवाली" एवं "चुटकुले" आदि रचनाएँ सराहनीय हैं। आशा है कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी / हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.), कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई गृह पत्रिका "संयुक्ता" के 8वें अंक की एक ई प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है । विशेष रूप से मैं कविता हूँ", "मेरे साथ मेरा क्या जाएगा", "कामवाली" एवं "चुटकुले" आदि रचनाएँ सराहनीय हैं। आशा है कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/ राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.) हरियाणा ,चंडीगढ़

ई-मेल (दिनांक- ११.०८.२०२२) के माध्यम से प्राप्त आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता के ८वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं । राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका 'संयुक्ता के ८वें अंक का ई-संस्करण डिजीटल रूप में आज सहजता से सभी पाठकों के हाथों में पहुँच चुका है जो स्वयं में एक विकास क्रांति है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय है बल्कि समाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती है। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय,प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के ८वें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ उच्च श्रेणी की हैं। विशेषकर " योग भगाए रोग", "नारी तू महान है", "समाज", "माता-पिता" आदि रचनाएं अत्यंत ही उच्च श्रेणी की है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड रांची

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के आठवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद । पत्रिका का आवरण तथा साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है । कार्यालयीन गतिविधि के चित्रों तथा बच्चों की कलाकृतियों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है ।पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय एवं रोचक है । श्रीमती दीपशिखा पुंज का लेख 'योग भगाए रोग', सुश्री रिया खटकड़ की कविता 'माता-पिता', श्री योगोश कुमार मिश्रा का आलेख 'जीवन के नाटक में मंच के नाटक का योगदान', श्री यादेव सिंह का लेख 'मधुर वाणी' तथा सुश्री बलजिन्द्र कौर की कहानी 'मेरे साथ मेरा क्या जाएगा' आदि रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं ।

राजभाषा हिन्दी की उन्नति एवं प्रचार- प्रसार में यह पत्रिका निश्चित रूप से अग्रणी है । इसका भविष्य और उज्ज्वल हो ,यही कामना है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को पुनः बधाई तथा शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.)बिहार ,पटना

आलेख कहानियां एवं कविताएँ

सिय सुंदरता बरनि न जाई..

श्री रमेश खटक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

माता सीता रामायण का ऐसा पूरक तत्व है जिसके बिना संपूरक ही नहीं सकता। श्री राम और माता सीता जी का सम्बन्ध ही ऐसा है जैसे प्रकृति में घटते अवश्यम्भावी परिणाम ,जैसे कर्म और उसका फल अर्थात ऐहो नही सकता कि एक हो और दूसरा नहीं हो। यथा एक जीवन और दूसरा प्राणवायु और ऐसा किसी कवि की कल्पना नहीं है स्वयं श्री राम जी रामायण में अनेकों स्थलों पर इसकी साक्षी भी देते है। अब यह साधारण सी घटना प्रतीत होती है कि व्याध ने क्रोंच पक्षी को वेध डाला।

व्याध का अपना क्रूर कर्म है और वह कर्म सिद्धांत से अवश्य ही करेगा। यही यह घटनाक्रम अपने आप ने बहुत गूढ़ है। यही क्रोंच-क्रौंची राम-सीता के रूपक है। इन्हें विलग करने वाला पापात्मा होगा करने और ऐसे का सर्वनाश निश्चित है। श्री राम सीता जी का यह वियोग ही रामायण रथ की केंद्रीय धुरी है।इस महा घटना ने इतिहास की नियति तय कर दी। कितना सुंदरता से महर्षि वाल्मीकि जी ने एक मार्मिक घटना से रामायण का विस्तार खोल कर रख दिया। रामायण में सैंकड़ों ऐसे घटनाक्रम और तथ्य है जिनसे ज्ञात होता है कि जनकनंदिनी सीता जी का व्यक्तित्तत्व कितना व्यापक है। उनका सशक्त चरित्र चट्टान की भांति प्रकट होता रहता है। वे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की अधिकारिणी है। सदैव स्व-धर्म सतर्क है। धर्म, नीति, जीवन के अनेकों कर्तव्यों पर उनके संवाद उपदेश कालजयी है। इसलिए माता सीता जी के अभाव में श्री राम जी निष्प्राण है।

रामायण में ऐसे अनेकों प्रसंग है जिसमें माता सीता के व्यक्ति के सभी पहलुओं पर भरपूर प्रकाश पड़ता है। यदि रामायण को सही से आत्मसात किया जाये तो माता सीता के प्रसंग में किसी भी प्रकार की कल्पना करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। माता सीता के प्रति महाराज जनक का अगाध वात्सल्य भाव इतना प्रगाढ़ है कि वे सदैव सीता जी को 'ममात्मजा' अर्थात मेरी आत्मा से उत्पन्न कहते है। उनका नाम सीता "क्षेत्र शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति" विश्रुता अत्यंत गूढार्थ है। उनके पिता महाराज जनक जी ने यह निश्चय क्यों किया कि जो महावीर उनके धरोहर रूप में रखे दूर शिवधनुष को उठा कर प्रत्यंचा चढ़ा पाने में सक्षम होगा उसी से सीता जी का विवाह सम्पन्न कराया।

केवल मात्र महाराज जनक जी के इस निश्चय से राजकुमारी सीता जी के व्यक्तित्व के बलशाली यौवना का चित्रण हो जाता है। इसकी साक्षी रावण द्वारा सीताहरण के समय भी मिल जाती है जब वह रावण जैसे महाबली असुर को धिक्कारती है, साहस के साथ प्रतिरोध करती है और अंत में सूझबूझ का परिचय देती है। श्री राम-सीता विवाह के अवसर पर महाराज जनक कहते हैं कि "छायेवानुगता सदा यह महाभागा सदैव छाया की भांति सदा तुम्हारे साथ चलने वाली होगी। सीता जी ने अपने पिता के इस वचन को चरितार्थ करके दिखाया। सीता जी के स्वरुप, गुण, व्यवहार का अत्यंत मनोहारी चित्रण अनेकत्र प्रकट किया गया है। सीता राम जी के हार्दिक अभिप्राय को अपने हृदय से और अधिक रूप से जान लेती थी एवं स्पष्ट रूप से बता भी देती थी। वे स्वरूप में देवांगनाओं के समान थी और मूर्तिमती लक्ष्मी सी प्रतीत होती थी।

श्री राम जी द्वारा सीता जी को अनेक स्थानों पर 'धर्मज्ञ धर्मचारिणी कहना बताता है कि वे परम विदुषी, मनस्विनी, कल्याणी और धर्मचारिणी वेद्वेता थी। श्री राम जी को वनवास का आदेश मिलता है और वे इसकी सूचना सीता जी को देते है एवं उनको उपदेशात्मक शैली में कहते है कि आप यहीं अयोध्या में रहकर वृद्धा माताओं और महाराज दशरथ की सेवा में रहो, तुम्हारे व्यवहार से किसी को कष्ट न पहुंचे और तुम मेरी इस आज्ञा का पालन करते हुए यहीं रहो। सीता जी अत्यंत क्रुद्ध होकर उनको प्रत्युतर देती हुई कहती है कि मुझे आपके मुख से ऐसे लघुवाक्य सुन कर हंसी आती है। पिता, माता, भाई, पुत्र और पुत्रवधू ये सब पुण्यादि कर्मों का फल भोगते हुए अपने अपने भाग्य के अनुसार जीवन निर्वाह करते है, केवल पत्नी ही अपने पति के भाग्य का अनुसरण करती है।अतः आपके वनवास के साथ मुझे भी वनवास की आज्ञा स्वतः ही मिल चुकी है। रघुनन्दन, यदि आप दुर्गम वन में प्रस्थान करेंगे तो मैं पथ के कुश और कंटकों को कुचलती हुई आपके आगे चलूंगी। वे पुनः कहती है मुझे किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इस विषय में मेरी माता सुनयना और पिता जनक ने अनेक प्रकार से शिक्षा दी है. इस विषय में मुझे कोई उपदेश देने की आवश्यकता नहीं है।

मैं जैसे अपने पिता के महलों में रहती थी उसी सुख से आपके साथ वन में रहूंगी। सीता जी के हठ को जानकर श्री राम वन के कष्टों का भय दिखलाते है। वनों में पर्वतों से गिरने वाले झरनों के महाभयंकर शोर सिंहों के नाद नरभक्षी वनीय जानवर नदियों के जल में ग्राह (घड़ियाल/ मकर (मगरमच्छ) वनों के बहुसंख्यक सांप मतवाले हाथी पतंगे, कीड़े होते है। वन में सूखे पत्तों की बिछोने पर सोना पड़ता है कंद मूल फल का आहार वल्कल वस्त्र और सिर पर जटा का भार ढोना वन की जीवनशैली है।

अतः तुम्हारा यहीं रहना उचित है परन्तु सीता जी इन सबका प्रतिकार करते हुए कहती कि ये वन के सभी दोष आपका साथ और स्नेह पाकर गुणरूप हो जायेंगे और आपको देखते ही वन के सब भयंकर जीव भयभीत होकर भाग जायेंगे। मुझे वनवास के कष्टों से कोई भय नहीं है लेकिन आपके बिना शत्रुओं के अधीन रहने से अच्छा तो मृत्यु का वरण श्रेष्ठ है। माता सीता कितनी दृढ प्रतिज्ञ है। श्री राम जी कहते हैं कि तुम्हें दुख देकर मुझे स्वर्ग का सुख भी स्वीकार नहीं और आपका धर्म से हट जाना असंभव है और अंततः श्री राम जी उनको स्वीकृति दे देते. है।तत्पश्चात सीता जी ने अपने से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का दान करके अपने अति आवश्यक वस्तुओं की गठरी बाँध कर वनगमन की तैयारी कर ली ।

सीता जी ने अपने बहुत से निजी आभूषण अपने पुरोहित सुयज्ञ की पत्नी को प्रदान कर दिए। वनगमन के अवसर पर जब माता कैकयी सीता जी के लिए वल्कल वस्त्र लाती है तब गुरु वशिष्ठ कुपित होकर कहते हैं कि सम्पूर्ण गृहस्थों की पत्नियों उनका आधा अंग होती है इस तरह सीता देवी श्री राम जी की आत्मा हैं और अब ये उनकी जगह इस राज्य का पालन करेगी अर्थात राजगुरु वशिष्ठ की दृष्टि में सीता जी इस महान साम्राज्य की उत्तराधिकारी और इसके सचालन में सक्षम है। लेकिन सीता जी अपने पति के मार्ग का अनुसरण करती हुई वल्कल वस्त्र धारण में प्रयासरत रहती। है। सीता अनुसूया संवाद में सीता जी की अद्भुत मेधा और प्रज्ञता का पता चलता है और उनके आत्मबल से परिचित देवी अनुसूया कहती है कि आपके युक्तियुक्त और उत्तम वचन सुनकर मुझे संतोष हुआ अतः बताओ में तुम्हार क्या प्रिय कार्य करूँ तब सीता जी कहती है कि आपने अपने वचनों द्वारा ही मेरा सर्व प्रिय कार्य कर दिया है अब मुझे कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं है।

दंडकारण्य में सुतीक्षण ऋषि के आश्रम में सब मुनिगण श्री राम जी से विनती करते हैं कि भयानक कर्म करने वाले राक्षसों ने वन में तपस्वी मुनियों का विनाशकांड मचा रखा है ।अतः इन निशाचरों से हमारी रक्षा कीजिए। श्री राम जी क्रोधवश निश्चय करते हुए कहते हैं कि में तपस्वी मुनियों से शत्रुता रखने वाले इन राक्षसों का समूल संहार करूंगा। सुतीक्षण ऋषि के आश्रम से विदा लेने के पश्चात सीता जी मार्ग में श्री राम जी कहती है कि यद्यपि आप वीर पुरुष है तथापि अत्यंत सुक्ष्म विधि से विचार करने पर आप अधर्म को प्राप्त हो रहे हैं। आपको क्रोध से जनित इस व्यसन से बचना चाहिए और वे एक आख्यान उनको सुनती है। वे कहती हैं कि इस जगत में काम क्रोध से तीन बड़े व्यसन उत्पन्न होते हैं- मिथ्याभाषण, परस्त्रीगमन और बिना वैर दूसरों के प्रति हिंसा। इनसे से दो का आप मे होना असंभव है परन्तु तीसरा व्यसन अर्थात दूसरों के प्राणों की हिंसारूप आपके समक्ष उपस्थित है। आपको इस घोर कर्म में प्रवृत हुआ देख कर में चिंताकुल हूँ चूँकि आपके हाथ में अस्त्र -शस्त्र है, जैसे अग्नि के समक्ष रखे हुए इंधन उसके तेजरूप बल को अत्यंत उदीप्त कर देते हैं उसी प्रकार क्षत्रियों के धनुष उनके प्रताप को उद्विग्न कर देते है। पुराकाल में किसी पवित्र वन में एक सत्यवादी और तपस्वी रहते थे। एक दिन आश्रम पर एक योद्धा हाथ में तलवार लिए आया और उसने कहा कि कृपया इस खड़ग को कुछ समय के लिए अपने पास धरोहर रूप में रखा तो तपस्वी ने वह खडग अपने आश्रम पर रखा ती और उसकी रक्षा में लग गये। धरोहर की रक्षा में तत्पर तपस्वी जहाँ कहीं भी जाते उस खडग को साथ ले जाते थे। खाते-पीते, सोते जागते, वन में कंद-मूल फल लाते समय, नदी से जल भरते सब समय उनके मन में यह खडग ही रहती तप ही जिनका धन था उन मुनि ने प्रतिदिन शस्त्र ढोते रहने के कारण अपनी बुद्धि को क्रूरतापूर्ण बना लिया। फिर तो अधर्म ने उन्हें आकृष्ट कर लिया और वे तपस्वी इस शस्त्र संगति के कारण रौद्र कर्म में तत्पर होकर नरकगामी हो गए।

अतः मैं आपको शिक्षा देती हूँ कि आपको बिना वैर के दंडकारण्य में राक्षसों के वध का विचार नहीं करना चाहिए। आपके धनुष धारण का प्रयोजन संकट में पड़े हुए प्राणी की रक्षा करना है। तब श्री राम जी उनकी बात से सहमति जताते हुए कहते हैं कि आपका वचन आपके कुल के अनुरूप है और आप सदैव धर्मरक्षिणी हो। इसी प्रकार ने अन्यत्र सीता जी के गुण, कर्म, स्वाभाव की सुंदरता के अनेकों प्रसंग रामायण में मिलते है। विश्व के नारी इतिहास में इतना महान आदर्श मिलना दुर्लभ है।

शनिवार की शाम

श्रीमती अमृत पाल कौर, व. लेखा परीक्षा अधिकारी (कमर्शियल)
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

सर्दी की ठंड

पर गाड़ी में लगे हीटर का घमंड,

ये तापमान का थोड़ा सा गिरना थोड़ा सा बिगड़ना,

ना कोई बहस ना कोई हाँ – ना,

सब ठीक ठाक था।

फिर कुछ देखा मैंने

हाँ उस अंधेरे में भी कुछ नज़र आया

नज़र आई जिद,

आगे बढ़ती जा रही गाड़ी की जिद,

उस धुंध भरी धुंधली हवाओं में भी दिखाई पड़ता था

कहीं पहुँच जाने का साफ़ इरादा,

और सड़क के दोनों तरफ खड़े पेड़ों का बुलावा,

जैसे अड़े हों हमारे ही इंतजार में,

बेकरार हों गले से लग जाने की आड़ में,

ये पल दो पल का आना था।

मशरूफ तो सब हैं,

जिंदगी से फुरसत कहाँ,

उन्हें भी होना रवाना था,
फिर दुनिया की भीड़ में खो जाना था।

कुछ ऐसी ही नहीं है जिंदगी,

लोगों का आना-जाना,

दो पल का गले लगाना।

पर क्या उस प्यार भरे आगोश को महसूस किया तुमने,

या तुम बैठे रहे जिंदगी के इन्तजार में,

जब वो एक-एक पेड़ की तरह गुज़रती जा रही थी समय

की मार से।

वो कल

श्रीमती अमृत पाल कौर ,व.लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

सुबह का समय। आफिस समय पर पंहुचने का नियमित संघर्ष और मन में दसों कामों की हडबडाहट। ऐसे में कामवाली का आ जाना और कुछ सुकून का अहसास होना ,आपकी नियमित दिनचर्या भी कुछ इसी प्रकार की रहती होगी। पिछले कुछ वर्षों से इसी प्रकार की सुबह रहती है।

ऐसे में न तो अपने खान –पीने और न ही सेहत के प्रति सजगता रह पाती है एवं न ही परिवार के प्रति। सुबह उठते कुछ क्षण भगवान को याद करना, खाने की तैयारी के लिए कुछ मदद कामवाली से लेते हुए खाना बनाना एवं फिर लंच पैकिंग करते ही कब कार्यालय का समय निकट आ जाता है, अहसास ही नहीं हो पाता।

कार्यालय पहुंच कर वहां कि व्यस्तता भरी दिनचर्या में कब समय निकल जाता है एवं कब 09:00 से 05:45 का समय हो जाता है ,कुछ पता नहीं चलता है।इसके बाद घर जाते ही सुबह के छोड़े हुए काम दिखाई देने लगते है एवं व्यस्तता से भरी पूरी दिनचर्या में कब सप्ताहांत आ जाता है। तब भी घर में नियमित प्रयोग का सामान भरने में ही सप्ताहांत निकल है। इसी प्रकार की तेज रफ्तार के बीच जीवन के पिछले कुछ वर्ष ऐसे ही निकले रहे है। ऐसे में स्वयं एवं पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य से ध्यान हटना स्वाभाविक ही है। पता जब चला जबकि सरकार द्वारा वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट के साथ हैल्थ रिपोर्ट को अनिवार्य कर दिया गया एवं न चाहते हुए भी आधा दिन का अवकाश लेकर पैनलड हस्पताल से हेल्थ जांच करवानी पड़ी। थायराइड जांच में मूल्यांकन निर्धारित सीमा से कुछ ऊपर था डॉक्टरी सलाह से पता चला कि यह आजकल बहुत ही सामान्य बात है क्योंकि हमारे जीवन में व्यायाम बिल्कुल नहीं रहा है।मैने इसे स्वाभाविक ही चेतावनी समझा और सोचा कि कल से सुबह के अपने कुछ क्षण में अपने और अपने परिवार की सेहत के लिए अर्पित कर दूंगी। डॉक्टर एवं जानकारों ने नियमित सैर की सलाह भी दी। परन्तु प्रतिदिन के संघर्ष में आज दो माह बाद भी मेरे लिए वो 'कल आना बाकी है। उम्मीद करती हूं जल्द से जल्द अपनी दिनचर्या को नियमित कर सकूँ और सुबह के व्यस्ततम रूटीन से कुछ क्षण अपने लिए निकाल पाऊँ।

इंसान तुम्हें क्या मिला

श्री अवतार सिंह,सहायक पर्यवेक्षक ,
महालेखाकार, (ले.प.)पंजाब, चंडीगढ़

ऊँची इमारते खडी करके,

जंगलों को काट शहर बनाकर,

ऐ इंसान तुम्हे क्या मिला

पंछियों के घरौंदे तोड़ ।

वन्यजीवों का विस्थापन कर ,

ऐ इंसान तुम्हे क्या मिला,

ग्रीन हाउस गैसों में बढोतरी ,

शुद्ध हवाओं को प्रदूषित कर ।,

ऐ इंसान तुम्हे क्या मिला,

जल चक्र को प्रभावित,

मिट्टी को बंजर बना कर ।

ऐ इंसान तुम्हे क्या मिला,

कुदरत की देन,

पृथ्वी की सुंदरता को नष्ट कर ,

ऐ इंसान तुम्हे क्या मिला।

प्रकृति की अनमोल धरोहर औषधीय वनस्पतियों को लुप्त कर ,

ऐ इंसान तुम्हे क्या मिला ,

वृक्षो को अंधाधुंध काट,

फिजा में जहर घोल कर ,

ऐ इंसान तुम्हे क्या गिला।

अब तो संभल जा ना कर तबाह,

प्रकृति की अनमोल धरोहर ,

वृक्ष लगा पर्यावरण बचा।

शायरी

श्री अवतार सिंह,सहायक पर्यवेक्षक ,
महालेखाकार, (ले.प.)पंजाब, चंडीगढ़

छोड़ जाएेंगे एक दिन जग यारा,
ढूंढोगे हमको इन अल्फाजों में,
कुछ तो ऐसा करके जाएंगे दोस्त,
तारी का नाम देखोगे तुम किताबों में"
रब्ब मुझे माफ करना तेरे से पहले,
माँ का नाम जुबां पे लाऊंगा,
सारी उम्र माँ के पैर चुमू तो भी,
कर्ज चुका ना पाऊँगा,
तेरी वजह से देखी दुनियाँ ये बात भुला ना पाऊँगा"
बिन मांगे समुन्दर मिले मांगे,
मिले ना इक बूँद,
जग में क्या ढूंढे है बन्दे खुद मे खुद को ढूँढ,
उलझ सी गई है जिन्दगी,
रिश्तों के तानों बानो में,
अब तो भीड सी हो गई है,
शहर के मेहरवानी में"
: ये वक्त क्या बिगाडेगा,
हम जैसे जानशीनों का,
जब साथ चलेगा काफिला,
मेरे दोस्त चार कमीनों का,
'तुम नही मेरी किस्मत में,
फिर भी ना जाने,
दिल कैसा हो जाता है,
मेरे लिखे अल्फाजों मे,
आज भी तेरा जिक्र आता है"
"क्यों दूर रहते है वो लोग,
जो दिल के करीब होते हैं
जिस कमबख्त ने जख्म दिए,
हम उसी के लिए क्यों रोते हैं"
"उनका यूँ रूठना हमारा मनाना,
वो भी क्या जमाना था,
जो हमसे घंटो कर लिया करते थे,
बातें ना जाने कब हो गया,
मैं उनके लिए बेगाना"

वो शब्द वहाँ से लाऊ,

मुझ पर जूँ यकीन कर ले,

तुमने पहले ही सोच रखा है,

कि गुनाहगार है हम "

"खुद से मिले अरसा हो गया,

आईने के सामने खड़ा होकर सोचता हूँ,

इस शख्स को नहीं देखा लगता है"

क्या खूब थे वो दिन बचपन के

पुराना घर वो गली वो मोहल्ला

कहाँ वो स्कूल गए जब से जवां हुए

साला जिन्दगी जीना ही भूल गये "

दोस्ती निभानी है तो एक बात सुन लो

यारों दोस्त के गुण ही नही उसकी कमियां भी स्वीकारों"

दिमाग तो सौदा करता है

प्यार की कदर क्या पाएगा

दिल की सुन कर देख जालिम

हमारा जिकर जरूर आयेगा "

नाजुक से इस दिल में,

पगली कितना दर्द खुदा छुपाए बैठी है

ए खुदा उसे वो सब कुछ देना

शहद में समायी स्वस्थता

सुश्री बलजिंदर कौर, व.लेखा परीक्षक
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

शहद एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जिसके बारे में शायद ही किसी को पता न हो। यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है और लगभग प्रत्येक घर की रसोई में पाया जाता है। शहद स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला स्वीटनर है। यह दुनिया भर में कई संस्कृतियों द्वारा उपयोग किया जाता है ।
साथ ही कई पारंपरिक दवाओं के लिए आधार के रूप में, विशेष रूप से आयुर्वेद में उपयोग किया जाता है । शहद के स्वास्थ्य लाभ और फायदे सदियों से मूल्यवान रहे है। शहद एकमात्र ऐसा भोजन है जो कीट निर्मित होता है। शुद्ध शहद कभी खराब नहीं होता। प्राकृतिक शहद के अलग-अलग स्वाद और रंग होते है। शहद एक औषधि के रूप में भी प्रयोग होता है। प्राचीन युनानी धर्म ने इसे देवताओं के भोजन के रूप में माना तो हिंदू धर्म में इसे अमरता (पंचामृत) के पांच अमृतों में से एक के रूप में माना जाता है।
आयुर्वेद में ऐसी मान्यता है कि अलग- अलग स्थानों पर लगने वाले के शहद जैसे के गुण अलग-अलग होते है। जैसे नीम पर लगे छत्ते का शहद आँखों के लिए, जामुन पर लगे छत्ते का शब्द मधुमेह और सहजन पर लगे छत्ते का शहद हृदयरोग और हाई बी पी' के लिए अच्छा होता है। शहद में विटामिन ए, बी, सी,आयरन,केल्शियम और आयोडीन पाए जाते हैं शहद के सेवन से शरीर में शक्ति, स्फूर्ति और ताजगी पैदा कर रोगों से लड़ने की शक्ति को बढ़ाता है । त्वचा की देखभाल के लिए शहद कमाल की चीज है । आईए जाने शहद के लाभ और इसके प्रयोग से सेहत और सूरत कैसे अच्छी बन सकती हैं ।

सेहत और सौंदर्य के लिए शहद :-

(1) बच्चों की खाँसी दूर करने के लिए अदरक कें रस में शहद मिलाकर देने से खाँसी में आराम मिलता है। सुखी खांसी में भी शहद और नींबू का रस होने से फायदा होता है।

(2) जुकाम दूर करने के लिए शहद, अदरक और 'तुलसी के पत्तों का रस बराबर मात्रा में मिलाकर चाटने से राहत मिलती है। इतना ही नहीं यदि आपको ठीक तरह से नींद नहीं आती तो रात को दो चम्मच शहद खाकर सोना लाभकारी होता है।

(3)उल्टी आने पर या जी मिचलाने पर भी शहद के सेवन करने से आराम मिलता है।

(4)शहद के सेवन से कब्ज भी दूर होती है। कब्ज की शिकायत होते पर टमाटर या संतरे के रस में एक चम्मच शहद मिलाकर खाने से लाभ होता है।

(5) वजन बढ़ाना हो तो रात में दूध में शहद मिलाकर पीने से वजन बढ़ना शुरू हो जाता है। न सिर्फ वजन बढ़ाने बल्कि वजन घटाने में भी शहद 'लाभकारी है। आप यदि गुनगुने पानी में नींबू रस और शहद मिलाकर सुबह खाली पेट लेंगे तो कुछ ही दिनों में आप अपना वजन कम होते हुए देख सकते हैं।

(6). "माँसपेशियाँ मजबूत करनी हो, बी.पी. नार्मल करना हो या हीमोग्लोबिन बढ़ाना हो तो शहद का सेवन लाभकारी है।

(7). यदि आपको एनीमिया है या आप बहुत अधिक थकान महसूस करते हैं तो भी आप नियमित रूप से शहद का सेवन कर इस बीमारी को दूर कर सकते है।

(8) जोड़ो में अधिक दर्द से राहत पाने के लिए शहद में दालचीनी पाऊडर मिलाकर मसाज करने और सेवन करने से ही आराम मिलता है।

(9) आँखों मे रोज़ 1-2 बूँद शहद की डालने से आँखों की रोशनी बढ़ती है।

(10) गर्भावस्था के दौरान शहद का सेवन करनेहोने वाला शिशु स्वस्थ एवं मानसिक दृष्टि से अन्य शिशुओं से श्रेष्ठ होता है।

(11)शहद को अनार के रस में मिलाकर पीने से दिमागी कमजोरी, सुस्ती, निराशा और थकावट ,आदि दूर होती है।

(12) शहद के नियमित उपयोग से दांतो और मसूड़ो 'की बीमारियों का काफी हद तक इलाज किया जा सकता है।

(13) शहद का इस्तेमाल औषधि बनाने के साथ-साथ सौंदर्य प्रसाधन (फेस पैक) की तरह भी किया जाता है जिससे चेहरे पर निखार आता है।

(14) शहद में एंटी बैक्टीरियल और एंटीसेप्टिक गुण होते है जिसकी वजह से घाव को भरने में या चोट से जल्दी आराम मिलने में मदद मिलती है। त्वचा के जल जाने, कट जाने या छिल जाने पर भी शहद लगाने 'से आराम मिलता है।

(15) हृदय के लिए भी शहद गुणकारी होता है, मीठी सौंफ के साथ 2-4 चम्मच शहद मिलाकर सेवन- करने से यह दिल को मजबूत तो करता ही है ; साथ ही हृदय को सुचारू रूप से कार्य करने में भी मदद मिलती है। इससे दिल और दिमाग की शक्ति बढ़ती है।

(16) साइनस की समस्या को दूर करने में भी शहद लाभकारी है। जब हमें किसी प्रकार का इन्फेक्शन होता है तो उस इन्फेक्शन के कारण वायरस साइनस को ब्लॉक कर देते है जो संकट का कारण बनता है। इसके इलाज के लिए शहद का उपयोग किया जाता है। शहद सभी प्रकार के गले के इन्फेकशन को भी शांत करता है।

(17) रूसी दूर करने के लिए शहद का उपयोग सबसे अच्छे प्राकृतिक घरेलू उपचारों में से एक है। यह बालों को मुलायम भी बनाता है। बालों को झड़ने से रोकने के लिए आप ग्रीन टी के साथ शहद का इस्तेमाल कर सकते है।

इस प्रकार शहद का नियमित और उचित मात्रा में उपयोग करने से शरीर स्वस्थ, बलवान सुंदर और स्फूर्तिवान बनता है और

विचारों की दुनिया से बचाव

श्री राजेश , लेखा परीक्षक (पंजाब कैडर)
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

विचार क्या है- विचार मात्र कल्पनाएं है जो कभी हमें भविष्य के बारे में सपने दिखाते है तो कभी अतीत के बीते हुए सुनहरे पलों में ले जाते है। यह विचारों का खेल सुबह आंख खुलते ही शुरु हो जाता है और रात में सपनों तक भी हमारा पीछा करता है।

विचारों से बचने के लिए हमें वर्तमान में जीना शुरु करना होगा। इसकी शुरुआत हम जो काम करते है उसे पूरी सजगता से करे। जैसे खाना खाते समय बस खाना ही खाएं। टीवी, फोन और यहां तक की बात भी ना करे। हम ऐसा करेगें तो खाना खाने में बहुत रस आऐगा। धीरे-धीरे ऐसे ही प्रतिदिन के सभी कामों को पूरी सजगता से करने का प्रयास करे। ऐसा करने से हमारे विचार भी कम हो जाऐगें। हमें पता लगेगा कि हम विचारो में फंसकर कैसे भुले भटके जीवन जी रहे थे। आप देखेंगे कि बहुत सारे विचार तो फिजूल ही थे। शुरु-शुरू में थोड़ी-सी कठिनाई होगी। विचारो के कम होते ही हम वर्तमान में जीवन जीने लग जायेंगें। वर्तमान में हम जैसे ही जीवन जीना शुरु करेंगें हमें नए –नए अनुभव मिलेंगे। आस-पास के हर-भरे वृक्ष और आकाश का ठहराव अनुभव होगा। हमारे लिए एक नयी दुनिया की शुरुआत हो जाएगी। अब हम छोटी-छोटी चीजों में खुश रहने लग जाऐगें। प्रत्येक कार्य को करते हुए एक सुकुन सा मिलेगा। आप आज से ही पहल करे ओर जीवन को आनंद के साथ जीएं।

आईना

श्री गुरमुख सिंह,लिपिक
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

किसी शायर सी फितरत है आईने की
हर किसी को खूबसूरत होने का गुमान देता है
चेहरा उसका भी आईने की तरह है लेकिन
वो बात बात पे चेहरा बदल देता है
सौ टुकड़ों में भी आईने ने मेरा चेहरा न बदला
लाख सिलवटे है मगर हमने अपना रिश्ता न बदला
आईना चुरा लेता है हर एक उदासी मेरी
मैं मुस्कुराता हूँ तो यह भी मुस्करा देता है
चेहरे की झुरियों से उम्र का अंदाजा ना लगाना
चेहरा दिखाई देता है आईने में, दिल नहीं
उसके फरेब का आलम है यह
कि वो आईने में खुद को भी नहीं पहचानता

फोटो गैलरी

हिंदी पखवाड़ा 2022 की कुछ झलकियां

फोटो गैलरी
हिंदी पखवाड़ा 2022 की कुछ झलकियां

फोटो गैलरी
हिंदी पखवाड़ा 2022 की कुछ झलकियां

फोटो गैलरी

हिंदी पखवाड़ा 2022 की कुछ झलकियां

फोटो गैलरी

हिंदी पखवाड़ा 2022 की कुछ झलकियां

फोटो गैलरी
हिंदी पखवाड़ा 2022 की कुछ झलकियां

ऑडिट दिवस 2022

ऑडिट दिवस 2022

ऑडिट दिवस 2022

of Audit (Central) Chandigarh
s you on the occasion of
Celebrations
handigarh

Audit (Central) Chandigarh
u on the occasion of
Celebrations
Purohit

ऑडिट दिवस 2022

ऑडिट दिवस 2022

Director General of Audit
Chandigarh
Audit Week
Chandigarh

Director General of Audit (Central) Chandigarh
you on the occasion of

मझधार

श्री संजीव , सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

मझधार ही कहीं जिन्दगी की न मंजिल बन जाए,

मैं करवट बदलता रहूँ और रात गुजर जाए

यही इलाज है मेरे दर्द ए दिल का

या तू समझ जाए या मेरा दिल संभल जाएँ

मोहब्बत में ये मुकाम तो हासिल हो मुझको

तू ही तो दिखाई दें, जहाँ तक नजर जाए

रिश्ते की परख के आजमाइश जरूरी है

मुझे सिर्फ तेरा सहारा है ,मुमकिन है कल को खुदा मुकर जाए

तेरी यादों में रहता हूँ चारों पहर मसरूफ

दिल बहलता रहे मेरा ,इससे पहले जिंदगी ठहर जाए

जिंदगी @40

श्री संजीव , सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

जिंदगी का मझधार है ये ,या मझधार पार हो गया
रोते ,हँसते,गिरते,संभलते मैं भी 40 पार हो गया
बालों में हल्की सफेदी चेहरे पर झुरियों की दस्तक
लगता है ऐसे जैसे मैं और जवां हो गया
रोते हँसते गिरते संभलते मैं भी 40 पार हो गया
कहाँ वो वेमतलब की बातें , बो वे मतलब की राहें
मेरा परिवार ही मेरा घर और संसार हो गया
रोते हँसते गिरते संभलते में भी 40 पार हो गया
कभी नादानी कभी जहाँ न मिला मुझको
लोग समझते है किताबें पढ़कर समझदार हो गया
रोते हँसते गिरते संभलते में भी 40 पार हो गया
दुनिया जीतने की चाह नहीं आसमान छूने की जद्दोजहद नहीं
जो कभी सपने में न चाहा वो भी साकार हो गया
रोते हँसते गिरते संभलते में भी 40 पार हो गया
रब की दुआ 40 बरस जिंदगी
मैं कल से ज्यादा बेहतर इंसान हो गया
रोते हँसते गिरते संभलते में भी 40 पार हो गया
जिंदगी का मझधार है ये ,या मझधार पार हो गया
जिंदगी पर्दा डालती रही मेरी नाकामियों के
उसकी शह से मैं भी कामयाब हो गया
रोते हँसते गिरते संभलते में भी 40 पार हो गया

खुदा और मैं

श्री सेवा राम , पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

मैं तुझपे शिकायतों का हर इख्तियार रखूं
ता उम्र खुदा तुम्हे मेरे दिल के पास रखूं
झूठ फरेब न किसी के बहकाबे में आऊ
मुझे उम्मीद हो तो में बस तुमसे फरियाद रखूं
शिखर हो या गहराई जिंदगी की
खुद को भूल जाऊं पर मैं तुझे याद रखूं
जमाना होगा कायल मेरे हुनर का लेकिन
मुझे फर्क हो तो मैं बस तुझ पर नाज रखूं
क्या मालूम कल को क्या हो जाए खुदा मेरे
मैं सपने देख सकूँ मैं तुझपे ऐतबार रखूं

देवी नहीं मुझे रक्षक बनना है

सुश्री अनुपमा वैद्य ,वरिष्ठ निजी सचिव
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

पता नहीं मुझको ,क्या है मैंने करना ,

देखती थी इर्द-गिर्द की दुनिया

पकड किताबें भांप लिया था,मुझको है कुछ बड़ा करना है

आज खड़ी हूँ उस मंजिल पर जैसे पूरा हुआ हो एक सपना

देवी नहीं मुझे है रक्षक बनना है

सुनती थी जब चिड़ियां की ची-ची

माँ के संग तब नाची अंगना ,

पंख नहीं थे पनपे मेरे,फिर भी चाहा नभ में उड़ना

अब न दिखती थी वो चिड़िया

कह गई थी धीरे से मुझको

देवी नहीं मझे रक्षक बनना है

भाई बंधु ,रिश्ते नाते ,ये सब हैं राह भटकाते

पथ पर तुझको साहूकार मिलेंगे ,भेंट नहीं उपहार मिलेंगे

भेष बदल कर चाटुकार मिलेंगे ,छिपे हुए घोटाले और भ्रष्टाचार मिलेंगे

बिजली बन कर इन पर गिरता नाम रोशन देश का करना

कह गई थी वो चिड़िया ,देवी नहीं मुझे रक्षक बनना है

देश की सेवा पहली पूजा ,इसके आगे धर्म नहीं दूजा

जन्म दिया है जिस जननी ने ,हर पल तू इसकी लाज है रखना

कलम तेरी से कांपे दुष्कर ,मोम नहीं तुझे चट्टान बनना है

चुपके से कह गई वो चिडिया ,तोता नहीं तुझे बाज बनना है

देवी नहीं ,मुझे रक्षक बनना है

बिना मृत्यु के पुर्नजन्म

सुश्री बलजिंदर कौर, व.लेखा परीक्षक
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

एक चोर ने राजा के महल में चोरी की। सिपाहियों को पता चला तो उन्होंने उसके पदचिन्हों का पीछा किया। पीछा करते-करते वे नगर से बाहर आ गये। पास में एक गाँव था। उन्होंने चोर के पदचिन्ह आगेकी ओर जाते देखे। गाँव में जाकर उन्होंने देखा कि एक संत सत्संग कर रहे हैं और बहुत से लोग बैठकर सुन रहे हैं। चोर के पदचिन्ह भी उसी ओर जा रहे थे। सिपाहियों को संदेह हुआ कि चोर भी सतसंग में लोगों के बीच बैठा होगा। वह वहीं खडे, रह कर उसका इंतजार करने लगे कि कब सत्संग समाप्त हो और उस चोर को पकड़े। सत्संग में संत कह रहे थे जो मनुष्् सच्चे हृदय से भगवान की शरण में चला जाता है, भगवान उसके सम्पूर्ण पापों को माफ कर देते हैं।

"गीता में भगवान ने कहा है, " हे मनुष्य तू सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मो को त्याग कर एक बार मुझ सर्व शक्तिमान प्रमेश्वर की शरण में आ जा मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।" इसी प्रकार वाल्मीकि रामायण की कुछ पंक्तियों की व्याख्या करते हुए संत जी ने कहाँ भगवान कहते है कि जो मेरा अर्थात् भगवान का हो गया, उसका मानों दूसरा जन्म हो गया। अब वह पापी नहीं रहा, साधु हो गया अगर कोई दुराचारी से दुराचारी भी अनन्यभक्त होकर मेरा भजन करता है तो उसको साधु ही मानना चाहिए। कारण यह है कि उसने बहुत अच्छी तरह से निश्चय कर लिया है कि परमेश्वरके भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है औरउसने सब कुछ त्याग दिया हैं।

यह सब कुछ चोर वहीं बैठा सुन रहा था। उस पर सत्संग की बातों का बहुत असर पड़ा। उसने वहीं बैठे बैठे यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि अभी से मैं भगवान की शरण लेता हूँ,मैं कभी चोरी नहीं करूँगा, भगवान का सत्संग करुगा। मैं , अब भगवान का हो गया।" सत्संग समाप्त हुआ। लोग उठकर बाहर जाने लगे। बाहर राजा के मैं सिपाही चोर की तलाश में खड़े थे। चोर बाहर, निकला तो सिपाहियों ने उसको पहचान लिया और पकड़ के राजा के सामने पेश कर दिया।

' राजा ने चोर से पूछा, "इस महल में तुम्हीं ने चोरी की है न? सच-सच बताओ, तुमने चुराया धन कहाँ रखा है? चोर ने दृढ़ता पूर्वक कहा महाराज इस जन्म में मैंने कोई चोरी नहीं की।" सिपाही बोला, महाराज् यह झूठ बोल रहा है। हम इसके पदचिन्हों को पहचानते हैं। इसके पदचिन्ह चोर के पदचिन्हों से मिल रहे है। इससे साफ सिद्ध होता है कि चोरी इसी ने की है। राजा ने चोर की परीक्षा लेने की आज्ञा दी, जिस से पता चले कि वह झूठा है या सच्चा। चोर के हाथ पर पीपल के ढाई पत्ते रखकर उसको कच्चे सूत से बाँध दिया गया। फिर उसके ऊपर गर्म करके लाल किया हुआ लोहा रखा परन्तु उसका हाथ जलना तो दूर, सूत और पत्ते भी नहीं जले लोहा जब नीचे जमीन पर रखा गया तो वह जगह काली ही हो गई। राजा ने सोचा कि.. वास्तव में इसने चोरी नहीं की, यह निर्दोष हैं। अब राजा सिपाहियों पर बहुत नाराज हुआ कि तुम लोगों ने एक निर्दोष पुरुष पर चोरी का आरोप लगाया है यह तो एक संत है। तुम लोगों को दण्ड दिया जायेगा। यह सुन कर चोर बोला नहीं महाराज आप इन सिपाहियों को दण्ड न दें इनका कोई दोष नही है चोरी मैंने ही की थी राजा ने सोचा कि साधु पुरुष हैं

इनका कोई दोष नहीं है। चोरी मैंने ही की भी यह सिपाही सच बोल रहे हैं। राजा ने सोचा कि यह साधुपुरुष है इसलिए सिपाहियों को दण्ड से बचाने के लिए चोरी का दोष अपने सिर पर ले रहा है। राजा बोला साधु जी आप इन पर दया कर के इनको बचाने के लिए ऐसा कह रहे हो पर मैं इनको दण्ड अवश्य दूँगा।

चोर बोला "महाराज मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, चोरी मैंने ही की थी। अगर आपको विश्वास न हो तो अपने सिपाहियों को मेरे साथ भेजो मैंने चोरी का धन जंगल में जहाँ छिपा रखा है, वहाँ से! लाकर दिखा दूँगा।" राजा ने अपने आदमियों को चोर के साथ भेजा। चोर उनको वहाँ ले गया जहाँ व उसने धन छिपा रखा था और वहाँ से धन लाकर बाद राजा के सामने रख दिया। यह देखकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा बोला अगर तुमने ही चोरी की थी तो परीक्षा लेने पर तुम्हारा हाथ क्यों नहीं जला ? तुम्हारा हाथ भी नहीं जला और तुमने, चोरी का धन भी लाकर दे दिया, यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। ठीक-ठीक बताओ, बात क्या हैं? चोर

बोला महाराज मैंने चोरी करने के बाद मैंने धन को जंगल में छिपा दिया और गाँव में चला गया। वहाँ एक जगह सत्संग हो रहा था। मैं वहाँ जा कर लोगों के बीच बैठ गया। सत्संग में मैंने सुना कि 'जो भगवान की शरण होकर पुन: पाप न करने का निश्चय कर लेता है, उसको भगवान सब पापों से मुक्त कर देते हैं और उस व्यक्ति का एक नया जन्म हो जाता है ।" इस बात का मुझ पर बहुत असर पड़ा और दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब से मैं कभी चोरी नहीं करूँगा। अब मैं भगवान का हो गया। इसलिए
तब से मेरा नया जन्म हो गया। इस जन्म में मैंने कोई चोरी नहीं की इसलिए मेरा हाथ नहीं जला। आपके महल में मैंने 'जो चोरी की थी वह तो मैंने पिछले जन्म में की थी। कैसा दिव्य प्रभाव है सत्संग का । मात्र कुछ क्षण के सत्संग ने चोर का जीवन ही पलट दिया। उसे सही समझ देकर पुण्यात्मा, धर्मात्मा बना दिया। चोर को सत्संग वचनों में पूर्ण विश्वास हो गया और इसी दृढ़ निष्य के कारण वह कठोर परीक्षा में भी सफल हो गया और उसका जीवन बदल गया। राजा उस चोर से साधु बने उस पुरुष का प्रजा ने भी सम्मान किया और प्रभु के रास्ते पर चलकर प्रभु कृपा से उसने परम पद को भी पा लिया। ऐसा प्रभाव होता है सत्संग का। बिना अच्छे कर्मों के सत्संग भी नहीं मिलता। पंजाबी का एक श्लोक भी हैं:- " बिन भागा सत्संग ना लभे , बिन संगत मैल भरीजे जीयो । सत्संग पापी से पापी व्यक्ति को भी पुण्यात्मा बना देता हैं। जीवन में सत्संग नहीं है तो आदमी कुसंगती में पड़ जाता है। कुसंगी व्यक्ति कुकर्म कर अपने आप को पतन की तरफ ले जाता है लेकिन सत्संग व्यक्ति को तार देता है, महान बना देता है। ऐसी महान ताकत हैं सत्संग में।

मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा

श्री राजीव वलिया ,सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

मानव के जन्म के बाद उसे अपना अपना धर्म ज्ञात होता है। कोई व्यक्ति चाहे किसी भी धर्म में जन्म लें उसके लिए सबसे बड़ा धर्म मानवीय सेवा होना चाहिए । वर्तमान समय में मनुष्य स्वार्थ में लिप्त हो चुका है। अपने सुख के लिए आज व्यक्ति मानवता की ही बलि चढ़ा देता है। जिससे समाज में मानवता को गहरी चोट पहुंचती है। हमने मानवता को भुलाकर अपने आप को जाति-धर्म, अमीर-गरीब जैसे कई बंधनों में बांध लिया है और उस ईश्वर को अलग-अलग बांट दिया है। यद्यपि पूरे विश्व में ईश्वर ने हम सभी को एक- सा बनाया है। फर्क बस, स्थान और जलवायु के हिसाब से हमारा रंग-रूप, खान-पान और जिंदगी जीने का अलग-अलग तरीका है। विभिन प्रकार की भ्रन्तिओं के कारण लोग आंखों में धर्म की पट्टी बांधकर मानवीय सेवा का त्याग कर देते हैं जो कि धर्म व समाज दोनों के लिए अहितकारी है। कुछ लोग धर्म की रक्षा करने की आड़ में मानवीय मूल्यों को भूल जाते है जबकि मानवता की रक्षा करते समय आपके धर्म के सभी नियम उचित साबित होते हैं। मानवीय सेवा ही सच्चा धर्म है। नि:संदेह हम अलग अलग धर्म से जुड़े हुए हैं लेकिन हम सभी एक ही परमपिता की संतान हैं। आत्मभाव से हर मनुष्य एक समान है। ऐसे में इस धरती पर जन्म लेने वाला हर प्राणी एक दूसरे से किसी ना किसी प्रकार से जुड़ा हुआ है। जब व्यक्ति ही व्यक्ति की मदद नहीं करेगा तो इस धरती से मानवता समाप्त हो जाएगी। मानवता का अंत होते ही मनुष्यों का भी पतन शुरू हो जाएगा। इसलिए मानवीय सेवा को अपना अहम धर्म बनाना अत्यंत अनिवार्य है । मात्र मानवता के श्रेष्ठ गुणों से युक्त हो कर आप ईश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। मानवता इंसान का सिर्फ एक अच्छा गुण ही नहीं बल्कि उसका धर्म भी होता है। सभी धर्मों में मानव सेवा को ईश्वर की सेवा बताया गया है । ऐसे में हर इंसान को यही प्रयास करना चाहिए कि वह सच्चे मन से, पूरी ईमानदारी के साथ न केवल इंसान की बल्कि और जीवों पर भी दया करें व उनकी सेवा करे ।

पर्यावरण प्रदूषण

श्री यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

धरती पर जीवित प्रत्येक प्राणी के जीवन के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। हवा, पानी प्रकाश, भूमि, पेड़, जंगल और अन्य प्राकृतिक तत्व सभी पर्यावरण के अंग हैं । हमारा पर्यावरण दिन-प्रतिदिन मानव निर्मित तकनीक तथा आधुनिक युग के आधुनिकरण के कारण नष्ट होता जा रहा है। इसलिए आज हम पर्यावरण प्रदूषण जैसी सबसे बड़ी समस्या का सामना कर रहे हैं। हाल ही में हमने इसका ताजा उदाहरण हिमाचल प्रदेश व् उतराखंड जेसे प्रदेशों में भूस्खलन और बादल फटने जैसी घटनाओं के रूप मे देखा गया है । हमारा पर्यावरण धरती पर स्वस्थ जीवन को अस्तित्व में रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण प्रदूषण, वातावरण में विभिन्न प्रकार की बिमारियों को जन्म देता है, जिसे व्यक्ति जीवन भर झेलता रहता है। यह किसी समुदाय या शहर की समस्या नहीं है । बल्कि दुनिया भर की समस्या है तथा इस समस्या का समाधान किसी एक व्यक्ति के प्रयास करने से नहीं होगा । अगर इसका निवारण पूर्ण तरीके से नहीं किया गया तो एक दिन जीवन का अस्तित्व नहीं रहेगा । प्रत्येक आम नागरिक को सरकार द्वारा आयोजित पर्यावरण आन्दोलन में शामिल होना होगा । यह सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उठाया गया छोटा सकारात्मक कदम बड़ा बदलाव कर सकता है तथा पर्यावरण गिरावट को रोक सकता है । मानव जाति द्वारा शहरीकरण और औद्योगीकरण के आन्दोलन ने चिकित्सा, उद्योग तथा सामाजिक क्षेत्र को विकसित किया है परन्तु प्राकृतिक परिदृश्य को कंक्रीट ईमारतों तथा सड़कों में तब्दील कर दिया । भोजन तथा पानी के लिए प्राकृतिक परादृश्यों पर हमारी निर्भरता इतनी अधिक है कि हम इन संसाधनों की रक्षा किए बिना जीवित नहीं रह सकते हैं। मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने के लिए विज्ञान तथा तकनीक को विकसित करना चाहिए, लेकिन हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए की यह वैज्ञानिक विकास भविष्य में पर्यावरण को किसी भी प्रकार से नुकसान न पहुचाए । सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक तथा बौद्धिक रूप से पर्यावरण प्रदूषण हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रहा है । आओ हम सभी पर्यावरण को सुन्दर बनाने मे अपना किसी न किसी रूप मे योगदान करें ।

सहनशीलता

श्री बीर सिंह ,सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महालेखाकार ले.प.पंजाब ,चंडीगढ़

सहनशील होना एक गुण है, जिससे जीवन का वास्तविक विकास होता है। आज हमारे जीवन में दु:ख और तनाव हावी हैं। इसका परिणाम यह है कि हम थोड़े से कष्टों से शीघ्र घबरा जाते हैं, क्रोधित हो जाते हैं । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सहनशील बनें ताकि हमारे कर्म और व्यवहार से किसी को कोई कष्ट न हो। सहनशीलता का गुण अभ्यास से सीखा जा सकता है। सहनशीलता का गुण आ जाने से समाज के बीच आदर होता है। जल्दी तनाव या क्रोध नहीं आ पाता । इसलिए सहनशील बने रहकर निज लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए । भारतीय संस्कारों में सहनशीलता को बहुत महत्व दिया गया है. । वास्तव में सहनशीलता मनुष्य का आभूषण है। सहनशील व्यक्ति को हर क्षेत्र में सफलता मिलती है। इसके उलट अगर किसी व्यक्ति में सहनशीलता का अभाव है तो उसे कई बार अप्रिय स्थितियों से भी गुजरता पड़ जाता है । सहनशीलता के अभाव में व्यक्ति में क्रोध पैदा होता है और क्रोध को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु माना गया है। क्रोधी व्यक्ति अक्सर अपना ही नुकसान कर बैठता है। यदि माता-पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देते है तो मानवीय गुण अनिवार्य रूप से बच्चों के मन में स्थान बनाते हैं । बड़ों का सम्मान, सभी के लिए दया भाव, प्रेम भाव, अहिंसा की भावना जैसे गुण बच्चों को परिवार से ही प्राप्त होते हैं । सहनशीलता एक बहुत बड़ा गुण है। जो मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ सिद्ध करता है । आजकल नई पीढ़ी में सहनशीलता की मात्रा कम होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण भौतिकतावाद, एकाकी परिवार का प्रभाव है। माता-पिता विभिन्न समस्याओं में उलझे रहने के कारण बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते। टीवी, मोबाइल, इंटरनेट में खोये रहने वाले बच्चों में सदगुण कम व दुर्गुण अधिक पैदा हो रहे हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि बच्चे अपने माता-पिता तक की बात को अनसुना कर जाते हैं। ऐसे में उनके अंदर सहनशीलता का भी अभाव हो रहा है। ऐसे में माता-पिता, परिवार, समाज, शिक्षण संस्थाएं सभी का यह दायित्व है कि बच्चों में भारतीय संस्कारों का समावेश कराने पर ध्यान दें। सिर्फ स्कूली पढ़ाई कराना ही पर्याप्त नहीं है। आधुनिक संचार माध्यम बच्चों के लिए जितने उपयोगी हैं, उससे ज्यादा नुकसान भी पहुंचा रहे हैं। ऐसे में बच्चों के हृदय में भारतीय संस्कारों का समावेश करने का प्रयास करें। उनके मनोभाव को समझना भी बेहद जरूरी है। बच्चों को ऐसा नहीं लगना चाहिए, उन पर कोई नई चीज थोपी जा रही है। बच्चों के मन के भाव को पहले समझें और फिर उन्हें समझाएं कि क्या अच्छा है और क्या खराब । आधुनिक संचार माध्यम का दुरुपयोग करने से आज जवान बच्चे भावनात्मक रूप में परिवारों से दूर होते जा रहे हैं। ऐसी स्थितियों में बच्चों के अंदर सहनशीलता जैसे गुणों का समावेश नहीं हो सकता। स्कूल हो या घर परिवार सभी जगह बच्चों के मनोभाव को समझने के बाद ही उनमें संयम और सहनशीलता का समावेश किया जा सकता है। बच्चों को समझाने के दौरान यह भी ध्यान में रखा जाना जरूरी है कि शिक्षक और अभिभावक एकदम से उनके मनोभाव के विपरीत न जाएं बल्कि पहले बच्चों को समझें और फिर उन्हें समझाने का कार्य करें। इससे बच्चों के अंदर संस्कारों का समावेश आसानी से किया जा सकेगा।राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का सादगी से भरा जीवन बहुत ही सहनशील था। वह प्राय: अपने प्रत्येक कार्य और व्यवहार में सहनशील बने रहते थे। वह समय के बेहद पाबंद थे और अपने मन, वचन व कर्म से कभी किसी को कष्ट देना पसंद नहीं करते थे। इसीलिए वे अपने जीवन में प्राय: सफल रहे थे।

सारहीन

श्री अनंत राम ,हिंदी अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक ले.प (केंद्रीय) चंडीगढ़

मेरे पास सब कुछ है।"

"क्या-क्या है आपके पास" यह कहते हुए वह उसे देख मुस्कुराई। वह दैत्य समान शरीर वाला हट्टाकट्टा युवक जो था। । उसने बेशकीमती जीन्स की पेण्ट और टी शर्ट पहन रखी थी उसकी खुली टीशर्ट से छाती के घने काले रोएंदार वालों पर मोटी-सी लंबी सोने की जंजीर झूल रही थी। उसकी अंगुलिया पत्रे- पुखराज से जड़ित सोने की अंगूठियां दीप्तमान थे। वह अपनी क्रीम कलर की गाड़ी के सहारे गर्व से ऐंठा खड़ा था।

"क्या नहीं है मेरे पास" वह बोला "यह टाटा सूमो देख रही हो ना, यह मेरी है। मैं अपने पिता के चमड़े की चीज बनाने वाली फैक्ट्री में डारेक्टर हूँ। वहाँ से मुझे तनख्वाह मिलती है। करने को कुछ खास नहीं है मेरे पास इस शहर के पॉश इलाके में कोठी है। शहर के उत्तरी कोने में विशाल फॉर्म हाउस है। फिर एक भव्य डिपार्टमेण्टल स्टोर और एक रिहायशी अपार्टमेण्ट है, जहां से किराये की बड़ी आय होती है।"

"वह सब चीजें तुम्हारे पिता की हैं " वह हंस कर बोली "तुम्हारा क्या है?

जो मेरे पिता का है ,वो मेरा हुआ समझो'" वह खीझ कर बोला "मुर्ख लड़की,इतना भी नहीं समझती ?

वही समझने की कोशिश कर रही हूँ वह गंभीर होकर बोली "जब पिता का सब कुछ तुम्हारा है ,तो वो जो सही गलत करेगा उसमें तुम भागीदार बनोगे तुम्हारे पिता पर सात हत्याओं और तीन बलात्कार का आरोप है, उस पर जहरीली शराब बेचने ,आतंकवादियों को पनाह देने के अलावा ब्लैक मनी रखने का भी आरोप है

अगर यह सभी सिद्ध होता है और उसे सजा होती है, तो क्या तुम भी सजा भुगतोगे?" "

क्या बकवास है" वह गुस्से में भरकर बोला "यह हमारे मौज-मजे के दिन हैं। मेरे इस भरे हुए पर्स को तुम देख रही हो?" "वह तो मैं बाद में देखूंगी। मगर तुमने सवाल का जवाब नहीं दिया। दोगे भी तो कैसे कानून इसकी इजाजत जो नहीं देता

ध्यान करने से जीवन में परिवर्तन

श्री राजेश , लेखा परीक्षक (पंजाब कैडर)
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

ध्यान हमारे जीवन के लिए जरुरी है। हम लोग हर समय कहीं खोये-खोये से रहते है। अगर हम ध्यान को अपने जीवन में रोजमर्रा के कामों की तरह शामिल कर ले तो हमारी उर्जा का इधर-उधर बहना बंद हो जाएगा। हमारे अंदर एक नई उर्जा का जन्म हो जाएगा। ध्यान करने से हमारे अंदर एक ठहराव आ जाएगा। हमारा ध्यान हमेंशा बाहर की ओर ही रहता हैं। हमें अपनी इसी ऊर्जा को अंदर की और ले जाना है। शुरु-2 में तो बहुत कठिनाई होगी। हमारा मन बाहर की ओर दौड़ेगा। हमें यह नियमित अपनी जिदंगी में करना होगा। फिर हमारा हर एक काम को करने में जो अनुभव होगा वो पहले से बहुत ही भिन्न होगा। हमारे जीवन का हर पल सुनहरा होगा। आप जीवन को सही मायनों में जी पायेंगे। आप जीवन को गहराई से जी पायेंगे। आप आस-पास की दुनिया को समझ पायेंगे। पक्षियों की मधुर आवाजें सुनकर मग्न हो जायेंगे। संगीत में डूब जायेंगे । जीवन में एक अदभुत शांति का उदय हो जाएगा। आपको आपने मन की चंचलता का पता लगेगा वो कैसे हमें दिन-भर दौड़ाता रहता है। हम जहां होते है वास्तव में हमारा शरीर ही वहां होता है। हमारा मन हमें कहीं और ही घुमा रहा होता हैं। ध्यान करने से आप मन के जाल से भी धीरे-धीरे मुक्त होने लग जायेंगे।अपने आप को सरल और सहज पायेंगे। आपके जीवन में एक अदुभत आनंद का उदय होगा।

भगवान कैसे दिखते हैं

श्री रोहित राणा सुपुत्र यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

एक समय की बात है एक गाँव में कहीं से एक बहुत बड़े, विद्वान आए। विद्वान से मिलने गाँव के सभी लोग एवं सभी धर्मो के गुरू आए। उनके समक्ष सभी धर्म गुरुओं ने अपने-अपने धर्म के अनुसार ईश्वर के रूप का बखान किया और बतलाया कि ईश्वर वैसा ही होता है जैसा उनके धर्म में कहा गया है बाकी धर्म गलत बतला रहे हैं।

तभी अतिथि विद्वान ने सभी को एक साथ बुलाया और उनसे कहा कि मैं आपको एक कहानी सुनाता उस कहानी को सुनकर आप समझ जाएंगे कि ईश्वर कैसा दिखाई देता है। उनके द्वारा सुनाई गई इस प्रकार है-

एक गाँव में बहुत सारे अंधे व्यक्ति रहते थे। उन्होंने कभी हाथी को नहीं देखा था। एक बार महावत गाँव में अपने साथ एक हाथी लेकर आया। अब गाँव में चारों और हाथी के आने की चर्चा थी ।अंधे व्यक्ति हाथी को देख नहीं सकते थे किंतु वे उसे स्पर्श कर उसका अनुभव लेना चाहते थे सबसे पहले बड़े बुजुर्ग अंधे व्यक्ति ने हाथी की पीठ में हाथ लगाया और उसे हाथी दीवार की तरह महसूस हुआ । इसके पश्चात दूसरा अंधा व्यक्ति हाथी के पास आया और हाथी के कानों को छुआ। उसे हाथी सूपे के के समान प्रतीत हुआ । तीसरे अंधे व्यक्ति ने हाथी के सिर को छुआ तो उसके हाथ में हाथी की सूंड आई जो उसे कोमल पेड़ के तने के समान प्रतीत हुई । चौथे व्यक्ति ने हाथी को छुआ तो उसके हाथ में हाथी पैर आए जो उसे खंभे के समान महसूस हुए। पाँचवे व्यक्ति के हाथ में पूँछ आई जो उसे हाथी किसी मोटी रस्सी के समान प्रतीत हुई हाथी को छूने के बाद सभी अंधे व्यक्ति अपनी जगह वापस आए। और अपना अनुभव साझा करने लगे।

पहला व्यक्ति बोला - " भाई हाथी तो दीवार की तरह होता है।" दूसरा व्यक्ति बोला- " नहीं नहीं हाथी तो सूपे की तरह होता है। " तीसरा व्यक्ति बोला-'" हाथी ना तो दीवार की तरह होता है हाथी तो कोमल पेड़ के तने के समान होता है। अतं में पाँचवा व्यक्ति कहता है . -" आप लोगों को कुछ नहीं मालूम हाथी तो एक मोटी रस्सी की तरह है। इस तरह उन पाँचो व्यक्तियों में बहस होने लगती है । तभी बुद्धिमान व्यक्ति बोला -" आप सभी अपनी जगह सही है क्योंकि हाथी तो कई गुना बड़ा है जिसने जो स्पर्श किया अपने अनुभव से यह वही बतला रहा है। और वह सत्य भी है। "

ठीक है , इसी तरह ईश्वर भी होता है वह इतना विशाल होता है की उसे समझ पाना किसी भी इंसान अथवा धर्म के बस की बात नहीं है। सभी धर्म के बारे में जो बतलाते है वह अपनी-अपनी जगह सही है किन्तु पूर्ण नहीं है ईश्वर को जिसमे जितना, समझा है वह उसके बारे में उतनी ही बातें बतला पाता है और सोचता है कि मैं अथवा मेरा धर्म सही है। बाकी सभी गलत है जबकि वास्तव में सभी धर्म अपने स्थान पर सही हैं है। इससे हमें शिक्षा "मिलती है कि सभी धर्म अपनी-अपनी जगह एवं भगवान् के नाम पर लड़ना गलत है। "

नारी की अश्रुपूरित कहानी

श्री सुनील, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

कभी सरेआम, कभी बंद चौखटों में सिसकती रही।
कभी आग में झुलसी, कभी जंगलों में भटकती रही।।
कभी आग का गोला, कभी बर्फ-सी पिघलती रही।
कभी मां कभी बहन-बेटी के किरदारों में ढलती रही।।

गिरती कभी संभलती, हर रोज़ अंगारों पर चलती रही।
कभी पलकें नम रही तो कभी आंसुओ की धार बहती रही।
कभी श्रद्धा, कभी निर्भया बनकर हर जुल्म सहती रही।
देखकर अन्याय हिमालय भी खड़ा है, धरती फटती नहीं।।

ऐ नारी! तेरी अश्रुपूरित कहानी सदियों से यूँ ही चलती रही।
धरा-सा धैर्य धरकर सदियों से अन्याय हँस कर सहती रही।।
कभी सतयुग में सीता बनकर अग्निपरीक्षा से गुजरती रही।
कभी अहिल्या बनकर श्राप से मुक्ति की प्रतीक्षा करती रही।।

कभी द्रौपदी बनकर शील की रक्षा हेतू याचना करती रही।
कभी पद्मिनी बन सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर करती रही।।
कभी लक्ष्मीबाई बनकर अपने अस्तित्व के लिए लड़ती रही।
कभी पन्नाधाय बनकर अपने मातृत्व का उत्सर्ग तुम करती रही।।

कभी मीरा बनकर विष को भी अमृत करती रही।
कभी सावित्री बनकर यम को भी पराजित करती रही।।
कभी यशोदा बनकर अपनी संतान की पीड़ा हरती रही।
धन्य है धरा जिसमे जीवन का पुष्प तुम पल्लवित करती रही।।

शत्रु को ललकार अब खुद ही हाथ में हथियार लेकर।
ना आएगा कोई कृष्ण तुझे बचाने अब अवतार लेकर।।
बनकर भवानी निकल समर में, हाथ मे कृपाण लेकर।
जो उठाये तेरे दामन पर हाथ, मिटा दे उसके प्राण लेकर।।

हो मुखर अन्याय का प्रतिकार कर, जुल्म को ना सहन कर।
कौन है रावण, भिक्षुक के भेष में अब ये पहचान कर।।
तू शक्ति हैं, तू दुर्गा है, तू अम्बे है, जगदम्बे है।
ले खड़ग हाथ में दुष्टों का संहार कर, रक्त का फिर पान कर।।

अपने शत्रु को निष्प्राण कर, शस्त्र का संधान कर।।
हो मुखर अन्याय का प्रतिकार कर, जुल्म को ना सहन कर।
अस्तित्व का मान कर, अपनी शक्ति की पहचान कर।
मुठ्ठी में अपने आसमान कर, बाज सी उड़ान कर।।

ना गोविंद बचाने आएंगे

श्री सुनील, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

तृष्णाओं के भ्रमजाल में सनातन संस्कार भुलाए बैठे हैं।
प्रेमजाल के प्रपंचों से जीवन हरने को शकुनि दाव लगाए बैठे हैं।।
छोड़ गए वृंदावन, ना कान्हा धीर बंधाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

अपनी क्षुधा मिटाने को व्याघ्र नज़र गड़ाए बैठे हैं।
नहीं सुनेगा मर्मांतक व्यथा मृग की, व्याध जाल बिछाए बैठे हैं।।
सुन पुकार दौड़े चले आते थे, ना मोहन बचाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

निष्ठुर यवनों से प्राणों की रक्षा की आस लगाए बैठे हैं।
षड्यंत्रों से बचना होगा, वैरी पग पग घात लगाए बैठे हैं।।
इंद्र विरुद्ध युद्ध लड़ना होगा, ना गिरिधर गोवर्धन उठाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

क्यों नहीं रही धरा अब पावन मथुरा और काशी सी।
क्यों नहीं बन पाती नारियां रानी पद्मिनी और झांसी सी।।
कर्त्तव्य पथ से विचलित अर्जुन को, ना उपदेश सुनाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

निस्तेज हुई तरुणायी, कहां कमी रही इनके लालन_पालन की।
क्यों भूल गए अपरिहार्यता नैतिक मूल्यों के अनुपालन की।।
व्याकुल मन की पीड़ा हरने, ना माधव मुरली मधुर सुनाएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

यश वैभव को भूल गए, अपने अतीत का भान नहीं।
अपने पुरखों पर मान नहीं, उनके गौरव का ज्ञान नहीं।।
गीता का उपदेश भूल गए, ना उद्धव समझाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

मर्यादा के पथ से विचलन के प्रलोभन आएंगे।
पांचाली के चीर हरण को दुर्योधन आएंगे ।।
द्रौपदी अब शस्त्र उठा लो, ना योगीश्वर चीर बचाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

जब जब लक्ष्मण रेखा के उलंघन्न के अवसर सम्मुख आएंगे।
ध्यान रहें फिर भेष बदलकर शील हरण को रावण आएंगे।।
नहीं खुलेगा नेत्र तीसरा, ना शिव तांडव मचाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

होता देख अधर्म धरा पर भीष्म, द्रोण जब मौन रहेंगे।
द्रोपदी के श्राप से बचकर फिर जीवित कौन रहेंगे।।
धर नृसिंह अवतार, ना नारायण प्रह्लाद बचाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

होगी जब प्रबल भावना व्यष्टी की, मानव मूल्य फिर गौण रहेंगे।
होगा रण फिर कुरुक्षेत्र का, अधर्म के पक्ष में कृपाचार्य_द्रोण रहेंगे।।
ले शस्त्र हाथ में लड़ना होगा, ना श्रीकृष्ण सुदर्शन चलाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

सदाचरण के पावन पथ की राह बड़ी है फिसलन की।
बहुत कठिन डगर है मर्यादा के अनुशीलन की।।
सही गलत का निर्णय स्वयं करना होगा, ना केशव समझाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

जीवन सफल बनाने को, आवश्यकता है मर्यादा के पालन की।
अब आन पड़ी है आवश्यकता, धर्मचक्र संचालन की।।
स्वतः नियति का निर्धारण कर, ना श्रीधर सोया भाग्य जगाने आएंगे।
कौन सुनेगा पुकार तेरी ना गोविंद बचाने आएंगे।।

नजरिया

श्रीमती वन्दना मेहता स.ले.प.अ.
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

भगवान का बनाया ये संसार कितना सुंदर है उसकी हर रचना कितनी सुंदर है उसकी व्यवस्था कितनी कुशल है। दिन रात, सूर्य का उगना, छिपना, सौरमंडल में ग्रहों की गति सब कितने व्यवस्थित ढंग से कार्य कर रहे है। इस संसार में अनगिनित जीव है जिनका भरण-पोषण किसी न किसी के द्वारा हो रहा है, ये सब भगवान की व्यवस्था ही तो है। संक्षेप में कहें तो भगवान की व्यवस्था कितनी पूर्ण है। यह है एक विचारधारा जबकि दूसरी ओर, भगवान ने किसी को तो सारे संसार के सुख दिये है जबसे किसी विशिष्ट व्यक्ति ने जन्म लिया तभी से उनके जीवन में सुख सुविधाओं का अंबार लगा हुआ है जबकि दूसरी ओर अन्य बहुत से लोगों के जीवन में केवल संघर्ष, कष्ट और मुसीबतें ही लिखी है। कही बाढ़ के कारण त्रासदी आयी तो कही भूकंप के कारण जान माल की हानि हुई। कही सुखा पड़ा तो प्राणी दाने दाने को तरसता है तो कही ज्वालामुखी फटने से प्रकृति का भयंकर मंजर देखने को मिला यह है दूसरी विचारधारा: अब प्रश्न यह उठता है कि भगवान का बनाया यह संसार आखिर है कैसा ? क्या भगवान दयालु है, न्यायकारी है, कुशल कारीगर है या भगवान क्रूर है जो अपने बनाये संसार को ही बाद में भूकंप, सुखा, ज्वालामुखी से नष्ट करने में लगे है। तो मेरा यह विचार है कि भगवान या संसार कैसा है ये हमारे नजरिये पर निर्भर करता है। अगर हमारा नजरिया सकारात्मक है तो हमें सभी जनमानस और संसार में हो रही प्रत्येक घटना के पीछे कोई न कोई मानवीय कारण नजर आयेगा अर्थात हमारे ही द्वारा की गई कोई त्रुटियाँ या असावधानियाँ ही है।

सच्चे अर्थों में कहें तो भगवान या परमपिता परमेश्वर चाहे उन्हें हम भगवान, वाहेगुरू, अल्लाह जीवन किसी भी रूप ।नाम से है तो वे हमारे जन्मदाता। अर्थात माता के गर्भ से जन्म लेने 'पुकारें से पहले हमारा अस्तित्व क्या था? हम कहाँ थे, किस रूप में थे यह खोज का विषय है जिसे शायद अभी तक कोई नहीं खोज पाया अगर हम छोटे स्तर पर सोचे कि हमे जन्म देने वाले हमारे सांसारिक माता-पिता हमारे जन्म से लेकर जब तक हम या हमारे माता-पिता जीवित है हमारा अपने सामर्थ्य के अनुसार सर्वश्रेष्ट पालन-पोषण करते है तो हम सब को संसार में लाने वाले हमारे परमपिता परमेश्वर हमारे साथ बुरा कैसे कर सकते है। वह तो हमारे लिए, हमारे पूर्व जन्मों में किये गये कर्मो के अनुसार सर्वश्रेष्ठ ही निर्धारित करते हैं! अब ये हम पर निर्भर करता है कि हम कर्म कैसे करते हैं। यदि हमारे पूर्व जन्मों के कर्मानुसार हमे सब सुख-सुविधायें नहीं मिली तो भी हमें उसे स्वीकार करना चाहिए और वर्तमान व भविष्य में शुभ कर्म करें, जितना हो सके सभी का भला करें, राष्ट्र ,समाज, की सेवा करे तो निश्चिय ही हम सच्चे सुख की अनुभुति करेंगे। ऐसी स्थिति में हम कष्टों में रहते हुए भी, दूसरों की सहायता करते हुए आनन्दित महसुस करेंगे अगर हमारा नजरिया सकारात्मक होगा तो हमे प्रत्येक व्यक्ति में सिर्फ उसके गुण नजर आऐंगे इसके विपरित अगर हमारा नजरिया नकारात्मक होगा तो हमे, हमारे साथ हो रही हर बुरी बात के लिए कोई ओर दोषी नजर आएगा ! अर्थात उसकी वजह से मेरा यह काम नही हो पाया, उसने मेरे खिलाफ विरुद्ध षड्यंत्र रचा, वह मुझसे नफरत करता है, वह चाहता नही है कि मैं आगे बढ़ू आदि आदि। ऐसे अधिकतर उदाहरण हर घर, हर आफिस में देखने को मिल जाएंगे। परन्तु हमे इस नजरिये को बदलकर अपना हमें नजरिया सकारात्मक बनाना होगा तभी संसार सुन्दर लगेगा और सभी लोग जो हमारे आस-पास है सभी में केवल गुण ही नजर आएंगे अगर अपने कार्यालय के संदर्भ में देखे तो सकारात्मक नजरिया होने से हमें अपने वरिष्ठ अधिकारी सहायक अधिकारी व कनिष्ठ सहकर्मी सभी में केवल गुण ही नजर आएंगे। हमारे सकारात्मक नजरिये के प्रभाव से हमारे सहकर्मी भी उससे प्रभावित होंगे तथा वे भी समय के साथ सकारात्मक व्यवहार करने लगेंगे और इस तरह हमारा कार्यालय, हमारा समाज, हमारा राष्ट्र और यह सारा संसार ही हमे सुन्दर लगने लगेगा।

भारत में भूजल संसाधन आपूर्ति एव चुनौती

श्री सार्जन कुमार
निजी सहायक(प्रशासन)

कृषि उधोग एवं अर्थव्यवस्था कि विभिन्न अन्य स्त्रोतों की विकास प्रक्रिया भारत मे जल की मांग बढ़ती जा रही है। जहाँ तक स्त्रोत की बात है तो उसके दो ही स्त्रोत है वर्षा से प्राप्त होने वाले जल जो की झील,नदियों ,तालाबों ,बांधों के रुप में उपलब्ध रहता है। दूसरा भूमिगत जल वर्षा से प्राप्त होने वाल जल ही भूजल संसाधानो भी रिचार्जिग का सबसे बड़ा स्त्रोत है, भूजल धीरे-धीरे सतत् रूप से कृषि एवं पेयजल सुरक्षा की रीढ़ के रूप मे उभरा है । भू जल का योगदान सिंचाई मे 62% ग्रामिण जलापूर्ति मे 85% और शहरी जलापूर्ति मे 50 % है । वर्षा जल कुल वार्षिक रीचार्जिग मे 61% का योगदान देता है । भारत मे प्रतिवर्ष औसतन 119 cm वर्षा होती है, लेकिन इसमे सबसे बड़े पैमाने पर क्षेत्रीय बिषमताएँ है, कुल वार्षिक वर्षा का बड़ा भाग दक्षिण पश्चिम मानसूनी वर्षा प्राप्त होता है, जो मुख्य रूप से जून से सितम्बर के दौरान होती है। तमिलनाडु मे अक्टूबर-दिसम्बर की अवधि मे पूर्व मानसूनी वर्षा होती है।

भारत मे भूजल संसाधन का आकलन 1901 से किया जाता है। जब पहले सिंचाई आयोग ने देश के सतही जल संसाधनो को 144 मिलियन हेक्टर मीटर माना था । सन् 1949 मे डॉक्टर ने अनु भवजन, फॉर्मुला के आधार पर सतही एवं भूमि हेक्टर मीटर होने का अनुमान लगाया था। 1976 मे राष्ट्रीय कृषि आय़ोग ने देश के कुल भूजल संसाधनो की मात्रा 67 मिलियन हेक्टर मीटर होने का आकलन किया था जिसमे से केवल 35 मिलियन हेक्टर मीटर भू जल उपयोग किए जाने योग्य था और उसमे से भी 26 मिलियन हेक्टर मीटर भू जल का उपयोग सिंचाई के जरिये किया जा सकता था।

भारत मे व्यवस्थित तरीके से भूजल संसाधनो का मूल्यांकन करने के लिए पहली व्यवस्थित विधि 1979 में भू -जल अति विदोहन समिति द्वारा विकसित की गई । इस समिति का गठन कृषि पुनर्वित एवं विकास निगम द्वारा केन्द्रीय भू-जल बोर्ड की अध्यक्षता मे किया गया था । इस समिति सफल भू जल रीचार्ज का आकलन 47 मिलियन हेक्टर मीटर माना था जबकि निवल रिचार्ज 32 मलियन हेक्टर था 1982 मे भारत सरकार ने भूजल प्राक्लन समिति का गठन किया जिसन हाइड्रोलॉजीकल अध्ययनों एवं भूजल विकास से जुड़े केन्द्रीय एवं प्रांतीय संगठनो के विशेषज्ञो को शामिल किया गया था । 1995 मे सभी राज्यों /केन्द्रशासित क्षेत्रो से भूजल संसाधनो से प्राप्त आकड़ो के अधार पर भारत मे भू जल संसाधनो पर एक राष्ट्रीय रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

भू जल प्राक्कलन समिति (1997) की कार्य विधि को अपनाते हुए 2004, 2009,2011,2013 को आधार वर्ष मानते हुये भारत के गतिशील भू जल संसाधनो का आकलन किया जाता है, प्राक्कलन विधि मे एक संशोधित कार्य विधि पर आधारित है।

केन्द्रीय भूजल बोर्ड द्वारा भारत मे गतिशील भूजल संसाधनों पर राष्ट्रीय संकलन 2022 मे प्रमुख निष्कर्ष निम्न है। कुल वार्षिक मूल रिचार्ज 437.60 अरब घन मीटर निकासी योग्य वार्षिक भू जल संसाधन 398.08 अरब घन मीटर जबकी भू जल की वार्षिक निकासी 239.16 अरब घन मीटर तथा भूजल निकासी का स्तर 60.08 प्रतिशत है। जो कि ऐसा लगता है देश मे पुनभरण के लिए सुरक्षित 24.69 लाख वर्ग किलोमिटर में 4.30 लाख वर्ग किलोमिटर भू-भाग (कुल का 17%) अति विदोहित है 0.77 लाख वर्ग किलोमिटर क्षेत्रफल मे भूजल विदोहन की स्थिति गम्भीर है। 3.03 लाख वर्ग किलोमिटर क्षेत्र मे भू जल विदोहन की स्थिति गम्भीर 16.18 वर्ग किलोमिटर क्षेत्रफल में भू जल की निकासी सूरक्षित मानी गई है। जैसा कि जम्मू,कश्मीर, लदाख, हिमाचल प्रदेश तथा उतराखण्ड मे लगभग सभी मौसम मे वर्षा होती है 75% वर्षा केवल 4 महीनों जून से सितम्बर के महीने मे ही हो जाती है।

देश मे वर्षा की आवृति और मात्रा मे व्यापक स्तर पर भौगोलिक भिन्नताए है पश्चिम घाटों, पूर्वोतर के अर्ध-हिमालया क्षेत्रों तथा मेघालय की पहाड़ियो मे औसतन 250 सेंटीमिटर वर्षा होती है। जबकि जम्मू एवं कश्मीर, तथा लदाख के उपरी भागो और पश्चिमी राजस्थान मे प्रतिवर्ष औसतन 40 सेटीमिटर ही वर्षा होती है. देश के बड़े भू-भाग उतरी, मध्य एवं पूर्वी भारत मे औसतन औसत बार्षिक वर्षा 75 से 150 सेंटीमिटर है सामान्यता देश के उतरी मे भाग जैसे जैसे पश्चिम की ओर बढ़ते है वर्षा घटती जाती है।

प्रायदीपीय भारत तटीय क्षेत्रो मे वर्ष का स्तर बढता जाता है।
भूजल संसाधन का आकलन 2022 मे देश मे भू जल संसाधन का आकलन किया गया । इस आकलन मे 2022 मे कुल वार्षिक भूजल पुनर्भरण 437.60 अरब घन मि.विलियन है । प्राकृतिक निर्वहन के लिए आवंटन रखते हुए वार्षिक निकासी य़ोग्य भूजल संसाधन 398.80 अरब घन मीटर है, वर्ष 2022 मे सारे देश मे 239.16 अरब घन मीटर जल भूमिगत स्त्रोत से निकाला गया जो कुल भमिगत जल का 60.08 प्रतिशत है देश के विभिन्न भागो मे जल के विभिन्न उपयोगी हेतु जल निकासी का स्वर एक समान नही है।

आंकलित किए गये 7089 ब्लाक मे 1006 इकाइयों में से 1006 का 14 प्रतिशत अति विदिहित इकाइयों के रुप मे चिहिंत किया गया है वे क्षेत्र है जिनमे भू जल की निकासी उप क्षेत्र मे ए जल पुनभरण से अधिक है 260 क्षेत्रो मे कुल का 40 प्रतिशत गंभीर स्थिति मे है इनक्षेत्रो मे वार्षिक निकासी योग्य भू जल मे 90-100 प्रतिशत तक जल निकासी की जाती है। 885 इकाइयाँ अंक गम्भीर वर्ग (12 प्रतिशत) है जहाँ जल की नकासी 70-90 प्रतिशत तक है 4780 (67 प्रतिशत इकाइया (क्षेत्रफल) सुरक्षित संवर्ग मे है. इन क्षेत्रो मे कुल वार्षिक निकासी योग्य भू जल का 70 प्रतिशत तक निकाला जाता है। 15.08 इकाइयो 2 प्रतिशत मे भू जल खारी है।

भूजल का अति विदोहन
सामान्य तौर पर भूजल का अति विदोहन देश के उन्य राज्य के भागो मे. बहुत अधिक है। जहाँ कृषि सिंचित वर्षा जल की अपेक्षा भू जल पर अधिक निर्भर है । अति विदोहित आंकलित इकाइयाँ इन क्षेत्रो मे संकेद्रीत है। पंजाब, हरियाणा , दिल्ली एव पश्चिम उतर प्रदेश जहाँ यधपि भूजल रिचार्जिंग हेतु पर्याप्त मात्रा मे सतही जल स्त्रोत मौजूद है तथापि बड़े पैमाने पर अविवेकपूर्ण तरीके से भूजल का विदोहन किया जाता है जो अति विदोहन की स्थिति मे पहुँच गया है।

देश की पश्चिमी भाग राजस्थान ओर गुजरात का मरुस्थलीय एवं अर्द मरुस्थलीय भ-भाग जहाँ भूजल का रिचार्जिंग समिति असम्भव है जो भूजल स्त्रोत दबाव की स्थिति मे है।

कनार्टक, तमिलनाडु ,तेलगाना एवं आन्ध्र प्रदेश के वे भौगोलिक क्षेत्र जहा क्रिसटलीय जल मृतो की अनतनिहित विशिष्टतओं के कारण भूजल उपलब्धता नीची है । देश के कुछ भौगोलिक क्षेत्रो मे निरंन्तर अच्छी वर्षा और सरकारी तथ्य निजी पहलों के माध्यम से भू जल संवर्धन और सरंक्षण उपायो जैसी प्रबंधन प्रथाओ के परिणाम स्वरुप भू जल की स्थिति मे सुधार हुआ है।

तदानुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत मे सतही जल (वर्षा से प्राप्त जल) एवं भू जल की उपलब्धता तथा उपयोग मे भारी असन्तुलन है । वर्षा का स्वरुप, सघनता और आवृति मे व्यापक रुप से परिर्वतन आया है। कई-कई दिनों तक होनी वाली वर्षा बीते समय की बात हो गयी है उससे भू जल का रिचार्जिंग सवार्धिक होता है। अब वर्षा एक ही दो दिन मे बहुत तीव्रता से होती है जिसमे भारत मे विभिन्न शहरों राज्यों मे भीषण बाढ़े आती है। अभी तक ऐसी कोई रणनिति नहीं बन पायी है जो खेत का पानी खेत मे घर का पान घर मे गाँव का पानी गाँव के सिद्धांत पर कार्य करें ताकि छोटी –छोटी नदियों – नालों पर बांध बनाकर वर्षा के पानी को संचय करके रोका जा सके ।इससे भू जल पर निर्भता भी कम होगी। ताकि शहरी क्षेत्रों में जल संचयन और जल संरक्षण एवं जल रिचार्जिंग सभी सोसटियो वाणिज्यिक भवनो विद्यालयों ,विश्वविद्यालयों, अस्पतालो, प्रशासनिक भवनों एवं अनिवार्यता होनी चाहिए , जल ही जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है इसके बिना जीवन नही है । इसकी उपलब्धता सीमित है। इसलिए इसका उपयोग किफायत और समझदारी से किया जाना चाहिए।

"रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया का डिजिटल मुद्रा में उत्कृष्टि: भारतीय वित्त में नये युग की शुरुआत"।

श्री राजकमल (लेखा परीक्षक)
कार्यालय महानिदेशक ले.प.(केंद्रीय) चंडीगढ़

प्रस्तावना: एक महत्वपूर्ण कदम के तौर पर, जो भारतीय वित्तीय दृष्टिकोण को पुनः रूप देने की क्षमता है, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)ने आधिकारिक रूप से डिजिटल मुद्रा के क्षेत्र में कदम रखा है। यह भारत के विकास में डिजिटल मुद्राओं के वैश्विक तरीकों को अपनाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अवसरों और चुनौतियों दोनों को पेश करता है। इस लेख में, हम RBI की डिजिटल मुद्रा पहल की जाँच करेंगे और इसके संभावित प्रभावों की खोज करेंगे।

डिजिटल मुद्रा को समझें: डिजिटल मुद्रा क्या है। डिजिटल रुपया (e₹) या eINR या E-Rupee का एक टोकनयुक्त डिजिटल संस्करण है जो(RBI) बैंक द्वारा जारी किया गया कानूनी निविदा है और कागजी मुद्रा का डिजिटल रूप है। केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा(CBDC) को जनवरी 2017 में प्रस्तावित किया गया था और इसे वित्तीय वर्ष 2022-23में जारी किया गया। डिजिटल मुद्रा, जिसे केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) भी कहा जाता है, जो भारत के केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किया गया डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक मनी है। यह भुगतान कल्याण, सुरक्षित और पूर्वानुमानित लेन-देन की अनुमति देता है।

RBI की प्रेरणा: RBI के डिजिटल मुद्रा शुरू करने के निर्णय के पीछे के कारणों को कुछ ऐसे देखा जा सकता है। जैसे बढ़ती डिजिटलीकरण, वित्तीय समावेशन में बेहतरता, और गैरकानूनी वित्तीय गतिविधियों को नियंत्रित करने की संभावना शामिल हो सकती है।जैसे कि लेन-देन लागत में कमी, वित्तीय समावेशन में वृद्धि, और वित्तीय प्रणाली में अधिक पारदर्शिता।

पारंपरिक बैंकिंग पर डिजिटल मुद्रा का प्रभाव: डिजिटल मुद्राओं में पारंपरिक बैंकिंग पर बहुत अधिक प्रभाव डालने की क्षमता है। सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक यह पारंपरिक बैंकिंग प्रणालियों का विकल्प प्रदान करता है, जिससे पारंपरिक बैंकों की आवश्यकता में कमी आ सकती है। डिजिटल मुद्राएं बैंकों जैसे मध्यस्थों की आवश्यकता के बिना पीयर-टू-पीयर भुगतान ऐप के माध्यम से लेनदेन की अनुमति देती हैं। जो विभिन्न डिजिटल भुगतान ऐप्स के माध्यम से किया जा सकता है । इससे लेनदेन शुल्क कम हो सकता है और लेनदेन तेज, और अधिक कुशल हो सकता है। डिजिटल मुद्राएं विकेंद्रीकृत प्रणालियों पर काम करती हैं, जो वित्तीय संस्थानों की मध्यस्थता पर निर्भर नहीं होती हैं, इससे वित्तीय संस्थानों को मध्यस्थ लेनदेन की प्रक्रिया से हटा दिया जाता है। इससे पारंपरिक बैंकों के राजस्व में भी कमी आ सकती है, क्योंकि वे अब मुद्रा विनिमय और अंतर्राष्ट्रीय धन हस्तांतरण जैसी सेवाओं के लिए शुल्क नहीं ले पाएंगे। डिजिटल मुद्राएं और भुगतान प्रणालियों में अन्य नवाचार, जैसे मोबाइल मनी और ब्लॉकचेन तकनीक, हमारे लेनदेन करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता रखते हैं। ट्रांजेक्शन कॉस्ट घटने के अलावा CBDC की सबसे खास बात है कि RBI का रेगुलेशन होने से मनी लॉन्ड्रिंग, टेरर फंडिंग, फ्रॉड की आशंका नहीं होगी। इस डिजिटल करेंसी से सरकार की सभी अधिकृत नेटवर्क के भीतर होने वाले ट्रांजेक्शंस तक पहुंच हो जाएगी।

भविष्य में डिजिटल मुद्रा के संभावित फायदे: भारत में केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा(सीबीडीसी) शुरु करने में बडे लाभों की संभावना है, जैसे कि नकदी पर कम निर्भरता, कम लेनदेन लागत के करण सिक्का ढलाई/कागज छपाई मे उच्च लाभ कम निपटान, जोखिम तथा संभवतः अधिक मजबूत, कुशल, विश्वसनीय, विनियमित और वैध मुद्रा आधारित भुगतान विकल्प का मार्ग प्रशस्त होगा। बेशक, इससे जुडे जोखिम है, लेकिन संभावित लाभों की तुलना में ध्यान से उनका मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। भारत के सीबीडीसी की दिशा मे जब हम आगे बढ़ेंगे तो आरबीआई का यह प्रयास होगा कि भुगतान प्रणालियों मे भारत की अग्रणी स्थिति को पुनः सिध्द करने के लिए आवश्यक कदम उठाए । आने वाले समय मे हर केंद्रीय बैंक के तरकश सीबीडीसी के होने की संभावना है। इसे स्थापित करने के लिए कार्यान्वयन में सावधानीपूर्वक नपे-तुले और बारिकियों पर ध्यान देने वाले दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।

मेरे दृष्टिकोण से (RBI)की केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) को बारीकी से समझने में और कई साल लगेंगे लेकिन मोटे तौर पर इसे समझने में यह लेख आपकी काफी मदद कर सकता है।

हमारा पर्यावरण

श्री सुदेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, परि और आवरण ।जिसमें परि का मतलब है हमारे आसपास वहीँ आवरण का मतलब है जो हमें चारों और से घेरे हुए। पर्यावरण में वह सभी प्राकृतिक संसाधन शामिल है जो कई तरीकों से हमारी मदद करते हैं और हमें बढ़ने तथा विकसित होने का बेहतर माध्यम देते है। वह प्रत्येक तत्व जिसका उपयोग हम जीवित रहने के लिए करते हैं, वह सभी पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं जैसे हवा, पानी, प्रकाश, भूमि, पेड़, जंगल और अन्य प्राकृतिक तत्व Lहमारा पर्यावरण भी हमसे कुछ मदद की अपेक्षा रखता है जिससे हमारा लालन पालन हो, हमारा जीवन बना रहे और कभी नष्ट नो हों .ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है तथा जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए, पर्यावरण है।

हमारा पर्यावरण धरती पर स्वस्थ जीवन को अस्तित्वमें रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन हमारा पर्यावरण दिन प्रतिदिन मानव निर्मित तकनीक और आधुनिकरण की वजह से नष्ट होता जा रहा है। इसलिए आज हम पर्यावरण प्रदूषण जैसी सबसे बढ़ी समस्या का सामना कर रहे हैं, यह किसी समुदाय एवं शहर की समस्या नहीं है बल्कि दुनिया भर की समस्या है तथा इस समस्या का समाधान किसी एक व्यक्ति के प्रयास से नहीं होगा।

वर्षों से हर वर्ष 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में लोगों में जागरूकता फ़ैलाने के लिए तथा साथ ही पर्यावरण स्वच्छता और सुरक्षा के लिए दुनिया भर में मनाया जाता है। हम सब लोगों के द्वारा उठाये गए छोटे क़दमों के माध्यम से आसान तरीकों से पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते हैं।

आओ देखें कि किस प्रकार हम पुरानी चीजों को दोबारा उपयोग में ला सकते हैं, उन बैटरी का उपयोग, जिन्हें दोबारा चार्ज किया जा सकता है, बारिश के पानी का संरक्षण करके, पानी की अपव्यय कम करके, उर्जा संरक्षण करके, प्लास्टिक बैग का उपयोग कम करके तथा बिजली की खपत कम करके हम पर्यावरण की वास्तविकता को बनाये रखने की मुहिम की और एक कदम बढ़ा सकते हैं।

यह सत्य है कि नष्ट होते पर्यावरण के लिए हमारे द्वारा किया गया छोटा प्रयास बडा सकरात्मक बदलाव ला सकता है।

कुछ बातें....... कुछ ख़ामोशी

श्रीमती अमृत पाल कौर, व. लेखा परीक्षा अधिकारी (कमर्शियल)
कार्यालय महानिदेशक ले.प. (केंद्रीय) चंडीगढ़

कभी कलम कभी किताब बन जाओ,

कभी सुनो किसी की कभी खुद ज़ुबाँ बन जाओ,

किसी की कहानी के गवाह बन जाओ,

थोड़ा वक़्त निकालो मशरूफ- ए- जिंदगी से,

खुशी के साज़ बन जाओ,

अब बहुतों को हरा लिया, अब कामयाब बन जाओ,

आसमां की बरसात बन जाओ,

वजह ज़रूरी नहीं, बेवजह ही किसी का साथ बन जाओ,

ज़्यादा सोचने से मुश्किलें आसान नहीं होंगी,

थोड़े बेपरवाह बन जाओ!

ग़ज़ल

श्री रविंदर सिंह
लिपिक कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

ना उम्मीदी की जिंदगी में गुंजाइश ही नहीं

वह जिंदगी क्या जिंदगी, जिसमें आजमाइश ही नहीं ||

सपनों के टूट जाने का ना अफसोस करना

बस अगली बार इरादा ना अपना कमजोर करना ||

इस जमाने में अकेला सफर में कौन होता है

जो दिखाई ना दे वह तो सबके साथ होता है ||

हंसते मुस्कुराते यू जिंदगी बीत गई

जिंदगी खुश हैं कि जिंदगी जीत गई ||

मेरी परेशानियों का बोझ इस तरह से कम हुआ

मेरे हम सफर से बंट गया, उसे भी गम हुआ ||

❖ सेवा निवृतियां ❖

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम लम्बे समय से कार्य करते आ रहे हैं उनकी सेवानिवृति का समय कब आ जाता है पता ही नहीं चलता इस कार्यालय में उनके द्वारा की गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति आभार प्रकट करते हैं। साथ ही उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख समृद्धि की कामना करते हैं ।

क्र. अधिकरियों/कर्मचारियों का नाम	पदनाम	सेवानिवृति की तिथि
1. खेम राज,	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.01.2022
2. के.एस.नागरा	वरिष्ठ .लेखा परीक्षा अधिकारी	30.08.2022

संयुक्ता

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

संयुक्ता

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

सत्यमेव जयते

संयुक्ता

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

नौवां अंक